بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

क़ुरान हदीस और इस्लाम

अंग्रेज़ी में लेख: रशाद खलीफा Ph.D,
इमाम, मस्जिद ट्यूसॉन, एरिज़ोना, अमेरिका

ISBN 0-934894-35-3

Library of Congress Card No. 82

Copyright © 1982 by ISLAMIC PRODUCTIONS
ALL RIGHTS RESERVED

No part of this book may be reproduced or utilized in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopying, microfilm, and recording, or by any information and retrieval system, without permission writing from the publisher.

For information address:
ISLAMIC PRODUCTIONS, 739 E, 6th Street, Tucson, AC 85719
U.S.A

तारुफ़

क़ुरान की 12 साल से भी ज़्यादा कंप्यूटर से की गई रिसर्च के बाद फिज़िकल एविडेंस की खोज की गई जिससे साबित हुआ कि क़ुरान वाकई ख़ुदा का कलाम है। जिसमे कोई गलती नहीं है ये खोज दुनिया भर के मुसलमानों के बीच बहुत मशहूर हुई और इस काम के मुख्तसर बयान को लाखों की तादाद में छपवाया और बांटा गया। इस दिलचस्प खोज के साथ साथ मेरी खुद की पहचान मशहूर होने लगी।

जारी रिसर्च ने फिर एक चौंका देने वाली हकीकत का खुलासा किया; कि बेहद मशहूर "हदीस और सुन्नत" का पैगंबर मोहम्मद से कोई लेना देना नहीं है, और ये साथ देती है जहाँ ख़ुदा और उसके आखिरी नबी की नाफरमानी खुले तौर पर पेश कर दी जाती है (क़ुरान 6:112 और 25:31). यह खोज हर जगह मुसलमानों के अकीदों को गलत साबित करती है। इसलिए, मेरी खुद की शोहरत और साथ में क़ुरान के मौजज़े की शोहरत मशहूर होने लगी, यहाँ तक के मेरी ज़िन्दगी और इज़्ज़त को भी खतरा हो गया। मुसलमानों को ये कहना कि "हदीस और सुन्ना" शैतान की इजाद है ये ऐसा ही है जैसे ईसाइयो से कहना ईसा ख़ुदा के बेटे नहीं है।

चूंकि "हदीस और सुन्नत" की पहचान एक शैतानी इजाद है और इसका फिज़िकल एविडेंस भी है, इसलिए सभी आज़ाद सोच रखने वाले लोग इस किताब में दर्ज की गई बातों को मंज़ूर करेंगे। नतीजे में, ऐसे लोगों की सोच में निजात का एक नया एहसास होगा, और पूरे जानकार होंगे कि तमाम मुस्लिम कौम शैतान की साज़िश का शिकार हो गई है।

अगस्त 19, 1982 **रशाद खलीफा**

रसूल की अताअत (हुक्म मानना) के बगैर निजात नहीं

قُلْ اِنْ كُنْتُمْ تُحِبُّوْنَ اللّٰهَ فَاتَّبِعُوْنِىْ يُحْبِبْكُمُ اللّٰهُ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوْبَكُمْ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٣١﴾

قُلْ اَطِيْعُوا اللّٰهَ وَالرَّسُوْلَ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَاِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ الْكٰفِرِيْنَ ﴿٣٢﴾

"कहो (ऐ मोहम्मद),'अगर तुम ख़ुदा से मोहब्बत करते हो, तो मेरी बातों को मानो फिर ख़ुदा भी तुमसे मोहब्बत करेंगे, और तुम्हें माफ़ करेंगे' कह दो,'ख़ुदा और उसके रसूल का हुक्म मानो' अगर वो मुँह फेर ले, तो समझलो कि ख़ुदा काफिरों से मोहब्बत नहीं करते।" 3 : 31-32

وَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَ اٰ تُوا الزَّكٰوةَ وَاَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ﴿٥٦﴾

"तुम नमाज़ और ज़कात कायम रखो, और रसूल की अताअत करो, ताकि तुम रहमत हासिल कर सको।" 24:56

وَرِسٰلٰتِهٖ وَمَنْ يَّعْصِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ فَاِنَّ لَهٗ نَارَ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ﴿٢٣﴾

"जो कोई ख़ुदा और उसके रसूल की नाफरमानी करेगा, वो हमेशा के लिए जहन्नुम की आग में रहेगा" 72:23

चूंकि सभी रसूलों ने एक ही पैगाम दिया, यानी, "तुम एक ही ख़ुदा की इबादत करोगे," उनकी नाफरमानी करना ऐसा है जैसे कुफ्र, या बुत-परस्ती करना।

ख़ुदा का पैगाम पहुँचाते वक़्त, रसूल अपनी मर्ज़ी से कुछ नहीं कहते

रब, तुम्हारा ख़ुदा, तुम्हारे भाइयों में से मेरे जैसा एक नबी खड़ा करेंगे; तुम्हें उनकी सुनना होगा। (मोज़ेस इन ड्यूटेरोनॉमी 18:15)

मैं तुम्हारे जैसा एक नबी खड़ा करूंगा उनके भाइयों में से, और मैं उनके मुंह से मेरी बातें कहलाऊंगा, वो उन्हें मेरी वोही बातें कहेगा जिसका मैं उसे हुक्म दूंगा अगर कोई मेरी बात नहीं मानेगा जो वो मेरे नाम से कहेगा, तो मैं उसे खुद सज़ा दूंगा। (ड्यूटेरोनॉमी 18:18-19)

"क्या तुम भरोसा नहीं करते कि मैं वालिद में हूँ, और वालिद मुझ में है? जो बातें मैं तुमसे कहता हूँ, वह मैं अपनी मर्ज़ी से नहीं कहता, लेकिन मेरे वालिद जो मुझमें बसते है अपने काम करवाते है।"

(गॉस्पेल ऑफ़ जॉन 14:10)

"लेकिन जब वह सच की **रूह** आएगा, तो तुम्हें सारी सच्चाई का रास्ता बताएगा, क्योंकि वो अपनी मर्ज़ी से कुछ नहीं कहेगा, लेकिन जो कुछ वोह सुनेगा वही कहेगा, और जो कुछ आने वाला है, उसका खुलासा करेगा।" (जॉन 16:13)

रसूल की अताअत करना ख़ुदा की अताअत करना हैं (क़ुरान 4:80)

مَن يُطِعِ الرَّسولَ فَقَد أَطاعَ اللهَ ﴿٨٠﴾

"और वो (मोहम्मद) अपनी मर्ज़ी से बातें नहीं करते" 53:3

मुहम्मद <u>सिर्फ</u> क़ुरान के नज़रिए से

وَاَنْزَلْنَآ اِلَيْكَ الْكِتٰبَ بِالْحَـقِّ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ مِنَ الْكِتٰبِ وَمُهَيْمِنًا عَلَيْهِ فَاحْكُمْ بَيْنَهُمْ بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ وَلَا تَتَّبِعْ اَهْوَآءَهُمْ عَمَّا جَآءَكَ مِنَ الْحَـقِّ لِكُلٍّ جَعَلْنَا مِنْكُمْ شِرْعَةً وَّمِنْهَاجًا وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ لَجَـعَلَـكُمْ اُمَّةً وَّاحِدَةً وَّلٰـكِنْ لِّيَبْلُوَكُمْ فِىْ مَآ اٰتٰىكُمْ فَاسْتَبِقُوا الْخَـيْرٰتِ اِلَى اللّٰهِ مَرْجِعُكُمْ جَمِيْعًا فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ فِيْهِ تَخْتَلِفُوْنَ ۙ﴿٤٨﴾

وَاَنِ احْكُمْ بَيْنَهُمْ بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ وَلَا تَتَّبِعْ اَهْوَآءَهُمْ وَاحْذَرْهُمْ اَنْ يَّفْتِنُوْكَ عَنْ بَعْضِ مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ اِلَيْكَ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَاعْلَمْ اَنَّمَا يُرِيْدُ اللّٰهُ اَنْ يُّصِيْبَهُمْ بِبَـعْضِ ذُنُوْبِهِمْ وَاِنَّ كَثِيْرًا مِّنَ النَّاسِ لَفٰسِقُوْنَ ﴿٤٩﴾

اَفَحُكْمَ الْجَـاهِلِيَّةِ يَـبْغُوْنَ وَمَنْ اَحْسَنُ مِنَ اللّٰهِ حُكْمًا لِّـقَوْمٍ يُّوْقِنُوْنَ ﴿٥٠﴾

'हमने पिछली सभी किताबों की तस्दीक करते हुए और उनकी जगह लेते हुए, सच्चाई से आपको **ये किताब** भेजी है। ख़ुदा की तरफ से जो भेजी गई है (ये किताब), उसके मुताबिक आप उनके बीच इंसाफ करो, और उनकी ख्वाहिशों को ना मानो अगर वो सच से भटक जाए... ख़ुदा के तरफ से जो भेजी गई है (ये किताब) उसके मुताबिक आप उनके बीच इंसाफ करो, और उनकी ख्वाहिशों को ना मानो, और **खबरदार** रहो, इससे कि वो तुम्हें उससे भटका दे जो ख़ुदा की तरफ से तुम्हें भेजा गया है (ये किताब)। ... क्या यह लोग जहालत के कानून की तलब करेंगे? सच्चे ईमान वालों के लिए **खुदा से बेहतर** कानून बनाने वाला कौन है?" 5:48-50

मोहम्मद को क़ुरान के अलावा किसी भी मज़हबी हिदायत पर बोलने से मना किया गया था

اِنَّهٗ لَقَوْلُ رَسُوْلٍ كَرِيْمٍ ۙ﴿٤٠﴾ وَّمَا هُوَ بِقَوْلِ شَاعِرٍ قَلِيْلًا مَّا تُؤْمِنُوْنَ ۙ﴿٤١﴾
وَلَا بِقَوْلِ كَاهِنٍ قَلِيْلًا مَّا تَذَكَّرُوْنَ ﴿٤٢﴾ تَنْزِيْلٌ مِّنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٤٣﴾
وَلَوْ تَقَوَّلَ عَلَيْنَا بَعْضَ الْاَقَاوِيْلِ ۙ﴿٤٤﴾ لَاَخَذْنَا مِنْهُ بِالْيَمِيْنِ ۙ﴿٤٥﴾
ثُمَّ لَقَطَعْنَا مِنْهُ الْوَتِيْنَ ﴿٤٦﴾ فَمَا مِنْكُمْ مِّنْ اَحَدٍ عَنْهُ حَاجِزِيْنَ ﴿٤٧﴾

"ये (क़ुरान) एक इज़्ज़तदार रसूल के बोल हैं ये किसी शायर के बोल नहीं है; तुम लोग बहुत कम ईमान रखते हो। ना ही यह किसी पेशनगोई करने वाले के बोल हैं; तुम लोग बहुत कम गौर करते हो। ये वही है कायनात के रब की तरफ से। **अगर उसने कोई और मज़हबी बातें कहीं होती** (हमारे नाम पे), हम उसे सख्त सज़ा देते, फिर हम उसपर वही उतारना रोक देते (उसे इस काम से निकाल देते) आप में से कोई भी उसे हमारे खिलाफ नहीं बचा सका होता।" 69: 40-47

ये साफ-साफ आयतें हमें सिखाती हैं कि मुहम्मद को क़ुरान के अलावा कोई और मज़हबी तालीमात देने से मना किया गया था। अरबी लिखाई का तर्जुमा मुकम्मल तरीके से कोई दूसरी ज़ुबान में नहीं किया जा सकता लेकिन ज़बरदस्त इज़्हारात शक की कोई गुंजाइश नहीं छोड़ते कि नबी का काम सिर्फ ये था कि क़ुरान, पूरा क़ुरान और **सिर्फ** क़ुरान को लोगों तक "**पहुचाना**"।

मोहम्मद को हुक़्म था कि क़ुरान के रास्ते से ना हटे
रास्ते से हटना यानी सख़्त सज़ा

وَاِنْ كَادُوْا لَيَفْتِنُوْنَكَ عَنِ الَّذِيْٓ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ لِتَفْتَرِيَ عَلَيْنَا غَيْرَهٗ
وَاِذًا لَّاتَّخَذُوْكَ خَلِيْلًا ﴿٧٣﴾ وَلَوْلَآ اَنْ ثَبَّتْنٰكَ لَقَدْ كِدْتَّ
تَرْكَنُ اِلَيْهِمْ شَيْـــًٔا قَلِيْلًا ﴿٧٤﴾ اِذًا لَّاَذَقْنٰكَ ضِعْفَ
الْحَيٰوةِ وَضِعْفَ الْمَمَاتِ ثُمَّ لَا تَجِدُ لَكَ عَلَيْنَا نَصِيْرًا ﴿٧٥﴾

"तुम्हें (ए मोहम्मद), हमारी दी गई आयतों से उन्होंने तकरीबन भटका दिया था; वो चाहते थे कि तुम कुछ और घड़ो ताकि वो तुम्हे अपना दोस्त मान सके। अगर ये ना होता के हम तुम्हें मज़बूत करते तो तुम तक़रीबन थोड़ा सा उसकी तरफ झुक चुके थे। अगर तुम ऐसा करते, तो हम इस दुनिया में तुम्हे दुगनी सज़ा देते, और मौत के बाद; कोई भी तुम्हारी हिफाज़त नहीं कर सकता हमारे खिलाफ।" 17:73-75

हमारे लिए एक मिसाल कायम करने में, नबी को हुक़्म दिया गया था कि वो ख़ुदा की आयतों पे बाक़ायदगी से अमल करें, खास तौर पर पता चलता है क़ुरान 5:48-50 में (पेज 3).

क़ुरान (उपर दी गई आयत 74 देखिए) से ज़रा सा भी भटकना सख्त अज़ाब की वजह बनता है।

मुहम्मद को **सिर्फ क़ुरान** पहुचाने का हुक़्म था, बग़ैर ज़रा सी भी तबदीली के, और इस के सिवाए कभी भी और कुछ ना "घड़ने" का हुक्म था :

وَاِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ اٰيَاتُنَا بَيِّنٰتٍ ۙ قَالَ الَّذِيْنَ لَا يَرْجُوْنَ لِقَآءَنَا ائْتِ بِقُرْاٰنٍ
غَيْرِ هٰذَآ اَوْ بَدِّلْهُ ۭ قُلْ مَا يَكُوْنُ لِيْٓ اَنْ اُبَدِّلَهٗ مِنْ تِلْقَاۗئِ نَفْسِيْ
اِنْ اَتَّبِعُ اِلَّا مَا يُوْحٰٓى اِلَيَّ ۚ اِنِّيْٓ اَخَافُ اِنْ عَصَيْتُ رَبِّيْ عَذَابَ يَوْمٍ
عَظِيْمٍ ۝١٥ قُلْ لَّوْ شَاۗءَ اللّٰهُ مَا تَلَوْتُهٗ عَلَيْكُمْ وَلَآ اَدْرٰىكُمْ بِهٖ ۡ فَقَدْ
لَبِثْتُ فِيْكُمْ عُمُرًا مِّنْ قَبْلِهٖ ۭ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ۝١٦ فَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى
عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا اَوْ كَذَّبَ بِاٰيٰتِهٖ ۭ اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الْمُجْرِمُوْنَ ۝١٧
وَيَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَضُرُّهُمْ وَلَا يَنْفَعُهُمْ وَيَقُوْلُوْنَ هٰٓؤُلَاۗءِ
شُفَعَاۗؤُنَا عِنْدَ اللّٰهِ ۭ قُلْ اَتُنَبِّـــُٔوْنَ اللّٰهَ بِمَا لَا يَعْلَمُ فِي السَّمٰوٰتِ
وَلَا فِي الْاَرْضِ ۭ سُبْحٰنَهٗ وَتَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ۝١٨

"जब उन्हें हमारी आयतें सुनाई जाती है, जो हमसे मिलने की उम्मीद नहीं रखते, वो कहते हैं, 'इसके अलावा कोई और क़ुरान लाओ, या इसे बदल दो' कहो (ऐ मुहम्मद), 'मैं इसे अपनी खुद की मर्ज़ी से बदल नहीं सकता' जो मुझ पर नाज़िल होता हैं, मैं सिर्फ उसपर ही अमल करता हूं। मुझे डर है, उस ख़ौफ़नाक दिन के अज़ाब का, अगर मैं अपने ख़ुदा की नाफरमानी करता हूँ'.... उस इंसान से ज़्यादा गुनाहगार कौन हो सकता है जो ख़ुदा के बारे में झूठ बातें इजाद करता हैं, या उसकी आयतों को ठुकराता है? गुनाहगार कभी कामयाब नही हुआ करते इसके बावजूद वो लोग खुद के अलावा उन्हें पूजते है जिनके पास उन्हें नुकसान या फायदा पहुचाने की कोई ताकत नही होती, और कहते है, 'ये ख़ुदा के पास हमारी सिफारिश करेंगे'.... ये शिर्क है।" 10:15-18

एक ख़ुदा / एक ज़रिया

हमारे अज़ीम-ओ-शान क़ादिर रे मुतलक़ ख़ालिक़ ने हुक़्म दिया है कि क़ुरान, खास तौर पर सिर्फ क़ुरान ही मज़हबी तालीमात का **<u>एक वाहिद ज़रिया होगा</u>**।

इसके अलावा, हमे ये बताया गया है कि मज़हबी हिदायत के लिए **<u>किसी और के ज़रिए को अपनाना ख़ुदा के अलावा किसी और को शरीक़</u>** करने के बराबर हैं:

قُلْ اَیُّ شَیْءٍ اَكْبَرُ شَهَادَةً قُلِ اللّٰهُ ۙ شَهِیْدٌۢ بَیْنِیْ وَبَیْنَكُمْ وَاُوْحِیَ اِلَیَّ
هٰذَا الْقُرْاٰنُ لِاُنْذِرَكُمْ بِهٖ وَمَنْۢ بَلَغَ ؕ اَئِنَّكُمْ لَتَشْهَدُوْنَ اَنَّ مَعَ اللّٰهِ
اٰلِهَةً اُخْرٰی ؕ قُلْ لَّاۤ اَشْهَدُ ۚ قُلْ اِنَّمَا هُوَ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ وَّاِنَّنِیْ بَرِیْٓءٌ مِّمَّا
تُشْرِكُوْنَ ﴿۱۹﴾

"कहो (ऐ मुहम्मद), 'किसकी गवाही बड़ी है?' कहो, ' ख़ुदा मेरे और तुम्हारे बीच इस बात के गवाह है कि **<u>ये क़ुरान</u>** मुझे तुम्हें और जिस किसी के पास पहुचे, उसे समझाने के लिए दिया गया हैं लेकिन तुम बेशक़ शहादत देते हो कि ख़ुदा के अलावा और भी माबूद हैं (क़ुरान के अलावा और भी ज़रियो को मानते हुए). कहो, 'जो तुम कर रहे हो वो मैं कभी नही करूंगा; मैं तुम्हारी बुत-परस्ती से इनकार करता हूँ।'"

6:19

ये गहरी आयत, जो इत्तेफ़ाक से सूरा 6 की 19 वी आयत है, इस में ईमान वालो को **<u>क़ुरान के अलावा</u>** मज़हबी तालीम के लिए **<u>कोई और ज़रिया</u>** बनाए रखने या उसको मानने से रोकती है, और ऐसा करना ख़ुदा के अलावा कोई और ख़ुदा को मानने के बराबर है।

एक ख़ुदा / एक ज़रिया

हमें बहुत ही सख़्त ज़ुबान में हुक़्म दिया गया है कि, क़ुरान, पूरा क़ुरान और क़ुरान के अलावा कुछ भी नहीं मानना है।

बार-बार, हमें **सिर्फ क़ुरान को ही मज़हबी तालीम** का ज़रिया बनाने का हुक़्म दिया जाता हैं।

बार-बार, हमें याद दिलाया जाता है कि **क़ुरान के अलावा किसी और ज़रिये को मज़हबी तालीम के लिए मानना ऐसा है जैसे ख़ुदा के अलावा कोई और ख़ुदा को मानने के बराबर हैं**।

सूरा 17 की आयत 22 से 38 बताती है क़ुरान के कुछ अहम हुक़्म। इन आयतों के फ़ौरन बाद हमें नीचे दिखाई गई आयत मिलती हैं:

ذٰلِكَ مِمَّآ اَوْحٰٓى اِلَيْكَ رَبُّكَ مِنَ الْحِكْمَةِ ۭ وَلَا تَجْعَلْ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ فَتُلْقٰى فِيْ جَهَنَّمَ مَلُوْمًا مَّدْحُوْرًا ۝۳۹

"ये कुछ हिक्मत है जो तुमको भेजा गया है (इस क़ुरान में), और तुम **ख़ुदा के अलावा किसी और ख़ुदा को नही मानोगे** (क़ुरान के अलावा कोई और ज़रियो को मान के). नहीं तो तुम्हे जहन्नम में फेक दिया जायेगा, कुसुरवार ठहराया जाएगा और रुसवा किया जाएगा।" 17:39

इन सभी हुक्मो और बहुत ही कड़ी हिदायतों के बावजूद, हदीस और सुन्नत के मानने वाले सिर्फ क़ुरान को क्यों नहीं मानते? जवाब पेज 11 पर देखिए।

क़ुरान: एक अनोखी क़िताब

इन सभी हुक्मो के बावजूद, हदीस और सुन्नत के मानने वाले **सिर्फ** क़ुरान को क्यों नही मानते?

इसका जवाब उसी सुरे में दिया गया है, उस हुक्म के बाद जो पेज 10 में दिखाया गया हैं। सूरा 17 के आयत 45 और 46 हमें ये बताती है कि जो लोग ख़ुदा को मानने से इंकार करते है और उनके हुक़्म पर गौर करने से, के **सिर्फ** क़ुरान को माना जाये, वो लोग दानिस्ता तौर पर क़ुरान से दूर किये जाते है। ये दो बहुत अहम आयतें नीचे दिखायी गई है:

وَاِذَا قَرَاْتَ الْقُرْاٰنَ جَعَلْنَا بَيْنَكَ وَبَيْنَ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ حِجَابًا
مَّسْتُوْرًا ۙ ﴿٤٥﴾ وَّجَعَلْنَا عَلٰى قُلُوْبِهِمْ اَكِنَّةً اَنْ يَّفْقَهُوْهُ وَفِيْٓ اٰذَانِهِمْ
وَقْرًا ۭ وَاِذَا ذَكَرْتَ رَبَّكَ فِي الْقُرْاٰنِ وَحْدَهٗ وَلَّوْا عَلٰٓى اَدْبَارِهِمْ نُفُوْرًا ﴿٤٦﴾

"जब तुम क़ुरान पढ़ते हो, तो हम तुम्हारे और जो आख़िरत पर ईमान नहीं रखते उन लोगों के बीच एक पोशीदा पर्दा रखते हैं और हम उनके दिलो पर ताले लगा देते है और उनके कानों को बहरा कर देते है ताकि वो क़ुरान को समझ न सके। इसलिए, जब तुम **वाहिद क़ुरान से** अपने रब का ज़िक्र करते हो तो वो नफ़रत से पीठ मोड़ कर चल देते है।" 17:45-46

हम इससे ज़्यादा और क्या कहें??

आप ख़ुदा पर यक़ीन करते हैं या नहीं ?

ख़ुदा कहते हैं कि क़ुरान मुक़म्मल, पूरा सही और पूरा तफ्सीली है, और ये के आप कोई दूसरे ज़रिये की तलब ना करें:

مَّا فَرَّطْنَا فِی الْكِتٰبِ مِنْ شَیْءٍ ثُمَّ اِلٰی رَبِّهِمْ یُحْشَرُوْنَ ﴿۳۸﴾
وَالَّذِیْنَ كَذَّبُوْا بِاٰیٰتِنَا صُمٌّ وَّبُكْمٌ فِی الظُّلُمٰتِ مَنْ
یَّشَاِ اللّٰهُ یُضْلِلْهُ وَمَنْ یَّشَاْ یَجْعَلْهُ عَلٰی صِرَاطٍ
مُّسْتَقِیْمٍ ﴿۳۹﴾

"हमने इस किताब में कोई भी बातें नही छोड़ी, फिर सब अपने रब के सामने (इन्साफ के लिए) इकट्ठे किए जाएगे। जो हमारी आयतों पर यक़ीन नहीं करते वो बहरे और गूंगे हैं; पूरे अंधेरे में। ख़ुदा जिसे चाहें उसे गुमराही मे छोड़ दे, और जिसे चाहे उसे सही रास्ते की तरफ चलाते है।" 6:38-39

اَفَغَيْرَ اللّٰهِ اَبْتَغِيْ حَكَمًا وَّهُوَ الَّذِيْٓ اَنْزَلَ اِلَيْكُمُ الْكِتٰبَ مُفَصَّلًا ﴿١١٤﴾

"क्या मैं कानून के लिए ख़ुदा के अलावा कोई दूसरे ज़रिये की तलब करूं, जब कि उन्होंने ये **<u>तफ्सीली किताब</u>** भेजी है? 6:114

وَتَمَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ صِدْقًا وَّعَدْلًا ﴿١١٥﴾

"तुम्हारे रब के कलाम **<u>मुक़म्मल</u>** है सच्चाई और इंसाफ में।" 6:115

ख़ुदा को न मानने का नतीजा

जैसे कि पेज 13 मे दिखाया गया है कि क़ुरान **मुक़म्मल, पूरा सही और पूरा तफ्सीली है**।

उनके हुक़ूमत साफ और सख़्त है कि **तुम मज़हबी तालीमात का ज़रिया क़ुरान के अलावा और कुछ नहीं** रखेंगे (पेज 8 और 9 देखें).

अब, आपको ये मुक़म्मल आज़ादी है कि आप ख़ुदा पर ईमान लाने का फैसला करें, या फिर उनके बयानों को ठुकराए, और उनके हुक्मो को नज़र अंदाज़ करें, बशर्ते कि आप चाहते हुए (न चाहते हुए भी) उन फैसलों से होने वाले नतीजों को क़ुबूल करने के लिए हो।

बेशक़, आप सहमत हैं के ख़ुदा को मानने से इनकार करना एक बहुत ही संगीन जुर्म है सूरा 7 की आयत 40 में कितना संगीन बताया गया है :

اِنَّ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَاسْتَكْبَرُوْا عَنْهَا لَا تُفَتَّحُ لَهُمْ اَبْوَابُ السَّمَآءِ وَلَا يَدْخُلُوْنَ الْجَنَّةَ حَتّٰى يَلِجَ الْجَمَلُ فِيْ سَمِّ الْخِيَاطِ وَكَذٰلِكَ نَجْزِى الْمُجْرِمِيْنَ ﴿٤٠﴾

"यक़ीनन, जो लोग हमारी आयतों पर ईमान नहीं लाते और उनपर तकब्बुर करते हैं, उनके लिए कभी आसमान के दरवाज़े नही खुलते और ना ही वो कभी जन्नत में दाखिल होंगे जब तक कि ऊँट सुई की आँख से निकल ना जाए। इस तरह हम मुजरिमो को सिला देते है।" 7:40

इस तरह, जो लोग ख़ुदा पर ईमान नही रखते उनका जन्नत में जाना जिस्मानी तौर पर नामुमकिन है।

ख़ुदा की आयतों की अहम परख

कुछ लोग दावा करते हैं कि "हदीस और सुन्नत" ख़ुदा की वही है। ज़ाहिर है, वो इस बात से वाकिफ नहीं कि ख़ुदा के वाही की परख ये है कि वो **पूरी तरह महफ़ूज़ है**। चूँकि नबी के नाम पर बनाए गए हदीस और सुन्नत बहुत ज़्यादा खराब हो चुकी हैं, वो कभी भी ख़ुदा की आयतो के उसूलो पर खरे नहीं उतर सकते। ये एक मानी गई हकीकत हैं के ज़्यादा तर हदीसे झूठी घडी हुई हैं।

اِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا الذِّكْرَ وَاِنَّا لَهٗ لَحٰفِظُوْنَ ۝٩

"हमने ये वही नाज़िल की है, और हम इसे महफ़ूज़ रखेंगे।"* 15:9

اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِالذِّكْرِ لَمَّا جَآءَهُمْ وَاِنَّهٗ لَـكِتٰبٌ عَزِيْزٌ ﴿٤١﴾
لَّا يَاْتِيْهِ الْبَاطِلُ مِنْۢ بَيْنِ يَدَيْهِ وَلَا مِنْ خَلْفِهٖ تَنْزِيْلٌ مِّنْ حَكِيْمٍ حَمِيْدٍ ﴿٤٢﴾

"बेशक़, यह एक आला किताब है। गुज़रे हुए वक़्त में या आने वाले वक्त मे कोई झूठ इसमें दाखिल नहीं हो सकता; एक किताब जो नाज़िल हुई सबसे ज़्यादा हिक्मत और तारीफ वाले ख़ुदा की तरफ से।" 41:41-42

बेअदबी ज़ाहिर होती है जब हम दावा करते है कि <u>हदीस</u> और <u>सुन्नत</u> ख़ुदा की आयते है। क्या उन्हें इस बात का एहसास नहीं के खुदा-ए-क़ादिर अपनी आयतों को महफ़ूज़ रखने के क़ाबिल है?

हदीस और सुन्नत = 100% मन-घड़त

हालांकि ख़ुदा ऐलान करते है कि क़ुरान **पूरा तफ्सीली है,** और वाहिद ज़रिया होना चाहिए, ज़्यादा तादाद में मुसलमान धोका खाये हुए है हदीस और सुन्नत के नाम पर मन-घड़त बातों को मान कर।

जबकि क़ुरान को **फिज़िकल एविडेंस** से ख़ुदा का सहीह और ना कोई फेरबदल किया हुआ लफ्ज़ साबित किया गया है (देखिये किताब,**"क़ुरान : विज़ुअल प्रेजेंटेशन ऑफ़ दी मिरेकल"**), हदीस और सुन्नत को सबकी सहमती से एक मन-घड़त बातों के तौर पर माना जाता है।

اَفَغَيْرَ اللّٰهِ اَبْتَغِىْ حَكَمًا وَّهُوَ الَّذِىْٓ اَنْزَلَ اِلَيْكُمُ الْكِتٰبَ مُفَصَّلًا ۭ وَالَّذِيْنَ
اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ يَعْلَمُوْنَ اَنَّهٗ مُنَزَّلٌ مِّنْ رَّبِّكَ بِالْحَقِّ فَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ
الْمُمْتَرِيْنَ ﴿١١٤﴾ وَتَمَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ صِدْقًا وَّعَدْلًا ۭ لَا مُبَدِّلَ لِكَلِمٰتِهٖ ۚ وَهُوَ
السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿١١٥﴾ وَاِنْ تُطِعْ اَكْثَرَ مَنْ فِي الْاَرْضِ يُضِلُّوْكَ عَنْ سَبِيْلِ
اللّٰهِ ۭ اِنْ يَّتَّبِعُوْنَ اِلَّا الظَّنَّ وَاِنْ هُمْ اِلَّا يَخْرُصُوْنَ ﴿١١٦﴾

"क्या मैं क़ानून के लिए **<u>खुदा के अलावा</u>** कोई दूसरे ज़रिये की तलब करूँ,जब कि उन्होंने **<u>ये तफ्सीली किताब</u>** भेजी है?....तुम्हारे रब का कलाम **<u>मुक़म्मल</u>** है, सच्चाई और इंसाफ में। उनके अल्फ़ाज़ को कोई चीज़ रद्द नही करेगी; वो सुनने वाले, सब कुछ जानने वाले है। फिर भी, अगर आप ज़्यादातर लोगों की बात मानते हैं, तो वो आपको ख़ुदा के रास्ते से दूर कर देंगे। ऐसा इसलिए है क्योंकि वो **<u>मन-घडत बातों</u>** पर अमल करते हैं, और वो <u>गौर करने में नाक़ाम</u> रहते हैं।" 6:114-116

اِنْ يَّتَّبِعُوْنَ اِلَّا الظَّنَّ وَمَا تَهْوَى الْاَنْفُسُ وَلَقَدْ جَآءَهُمْ مِّنْ رَّبِّهِمُ الْهُدٰى ﴿٢٣﴾

"जब उन्हें यहां उनके रब की ओर से हिदायत दी जाती है, तो वो मन-घड़त बातों पर अमल करने पर ज़ोर देते है।" 53:23

रसूल की बात मानने में <u>शर्त रखी गई है</u>

जहाँ तक क़ुरान की आयतों की बात है रसूल को मानने में कोई शर्त नहीं है।

रसूल को मानना यानी क़ुरान, पूरा क़ुरान और क़ुरान के अलावा कुछ नहीं मानने में है।

सख़्ती से फ़रमाँबरदारी यह **<u>शर्त पर है</u>** कि ज़रिया ख़ुदा है रसूल के ज़रिए, और ना कि वो रसूल जो एक इंसान है, जिससे गलतियां हो सकती है।

जैसा कि नीचे दी गई आयत में दिखाया गया है, एक इंसान के तौर पर रसूल का हुक़्म **सिर्फ** तभी मानना चाहिए जब वो सही हो:

يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ اِذَا جَآءَكَ الْمُؤْمِنٰتُ يُبَايِعْنَكَ عَلٰٓى اَنْ لَّا يُشْرِكْنَ بِاللّٰهِ شَيْـًٔا وَّلَا يَسْرِقْنَ وَلَا يَزْنِيْنَ وَلَا يَقْتُلْنَ اَوْلَادَهُنَّ وَلَا يَاْتِيْنَ بِبُهْتَانٍ يَّفْتَرِيْنَهٗ بَيْنَ اَيْدِيْهِنَّ وَاَرْجُلِهِنَّ وَلَا يَعْصِيْنَكَ فِيْ مَعْرُوْفٍ فَبَايِعْهُنَّ وَاسْتَغْفِرْ لَهُنَّ اللّٰهَ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٢﴾

"ऐ नबी, अगर ईमान वाली औरतें तुम्हारे पास आकर वादा करे कि वो ख़ुदा के सिवा किसी और कि इबादत नहीं करेंगी, ना चोरी करेंगी, ना ज़िना करेंगी ना ही अपने बच्चों की जान लेंगी, ना ही कोई झूठ बातें बनाएंगी, और ना ही तुम्हारी नाफरमानी करेगी **<u>जब तुम सही हो</u>**, तो तुम उनके वादे को क़ुबूल करो, और ख़ुदा से उनकी माफी के लिए दुआ करो।" 60:12

इस तरह, यह शर्त साफ़ है के मुहम्मद एक बशर और मुहम्मद एक रसूल भी थे।मुहम्मद जो इन्सान थे उनका हुक्म सिर्फ तभी मानना चाहिए **<u>जब वो सही है।</u>**

रसूल की बात मानने में <u>शर्त रखी गई है</u>

क़ुरान इस बात पर ज़ोर देता है के रसूल की फरमाबरदारी ज़रूरी है जब उनकी बातों का ज़रिया ख़ुदा की तरफ से हो, जबकि रसूल की ज़ाती राय उनके ख़ुद के लिए और या उनके लिए नुकसानदेह हो सकती है जो उनकी ज़ाती राय को मानेंगे:

مَآ اَصَـــــــــــابَكَ مِنْ حَسَنَةٍ فَمِنَ اللّٰهِ وَمَآ اَصَـــــــــــابَكَ
مِنْ سَيِّئَةٍ فَمِنْ نَّـفْسِكَ ۭ وَاَرْسَلْنٰكَ لِلنَّاسِ رَسُوْلًا ۭ وَكَفٰى بِاللّٰهِ شَهِيْدًا ۝۷۹

مَنْ يُّطِعِ الرَّسُوْلَ فَقَدْ اَطَاعَ اللّٰهَ ۚ وَمَنْ
تَوَلّٰى فَمَآ اَرْسَلْنٰكَ عَلَيْهِمْ حَفِيْظًا ۝۸۰

"(ऐ मुहम्मद) तुम्हारे साथ जो कुछ भी अच्छा होता है वो ख़ुदा की तरफ से होता है। और तुम्हारे साथ जो कुछ भी बुरा होता है, वो <u>तुम्हारी तरफ</u> से होता है। हमने तुम्हें लोगो की तरफ एक रसूल बनाकर भेजा है, और ख़ुदा गवाह की तौर पर काफी है। जो कोई रसूल की अताअत करता है वो ख़ुदा की अताअत करता है। जहां तक मुंह मोड़ने वालो का सवाल है, तो हमने तुम्हें उनकी निगरानी के लिए नहीं भेजा।" 4:79-80

इस तरह, मुहम्मद की खुदकी राय बुरी हो सकती है, या बुरी चीज़ों की वजह बन सकती हैं। दूसरी तरफ, मुहम्मद, जो एक रसूल है सिर्फ **<u>ख़ुदा के अल्फ़ाज़ कहते है,</u>** जो की क़ुरान है, और इसका पूरी तरह से अमल किया जाना चाहिये क्योंकि जो कोई रसूल की अताअत करता है वो ख़ुदा की अताअत करता है, और हमें ख़ुदा के हुक्मो की अताअत करना है, न कि इंसान के हुक्मो की।

रसूल की बात मानने में <u>शर्त रखी गई है</u>

क़ुरान में कई सारी मिसाले दी गई है के हमें वही बातें माननी चाहिए जो मोहम्मद ने ख़ुदा के रसूल की हैसियत से कही है, **ना के** इंसान की हैसियत से कही है। रसूल की हैसियत से उन्होंने सिर्फ क़ुरान की बातें कहीं और क़ुरान के अलावा कुछ नहीं कहा।

इसके अलावा, क़ुरान सिखाता है कि मोहम्मद ने इन्सान की हैसियत से असल में संगीन गलतिया की। इस तरह, नीचे दिखाई गई आयत में, हम देखते हैं कि ख़ुदा एक कानून बनाना चाहते थे और वो ये था के एक आदमी अपने गोद लिए हुए बेटे की तलाकशुदा बीवी से शादी कर सकता है। मोहम्मद हमारी मिसाल बनना था। हालांकि, ये अरब के लोगो के रिवाज़ के खिलाफ था, और नबी दरअसल "ख़ुदा से डरने के बजाय लोगों से डरे थे।"

وَاِذْ تَقُوْلُ لِلَّذِیْٓ اَنْعَمَ اللّٰهُ عَلَیْهِ وَاَنْعَمْتَ عَلَیْهِ اَمْسِكْ عَلَیْكَ زَوْجَكَ وَاتَّقِ اللّٰهَ وَتُخْفِیْ فِیْ نَفْسِكَ مَا اللّٰهُ مُبْدِیْهِ وَتَخْشَى النَّاسَ وَاللّٰهُ اَحَقُّ اَنْ تَخْشٰىهُ فَلَمَّا قَضٰى زَیْدٌ مِّنْهَا وَطَرًا زَوَّجْنٰكَهَا لِكَیْ لَا یَكُوْنَ عَلَى الْمُؤْمِنِیْنَ حَرَجٌ فِیْٓ اَزْوَاجِ اَدْعِیَآىِٕهِمْ اِذَا قَضَوْا مِنْهُنَّ وَطَرًا وَكَانَ اَمْرُ اللّٰهِ مَفْعُوْلًا ﴿۳۷﴾

"तुमने उससे कहा जो ख़ुदा की तरफ से बक्शा गया था, और बक्शा गया था तुम्हारी तरफ से, 'अपनी बीवी को तलाक़ न दो और ख़ुदा की तरफ ध्यान दो.'इस तरह, तुमने वो बात छुपाई जिसका ख़ुदा ज़ाहिर करना चाहते थे, और तुम लोगो से डर गए जबकि तुम्हे सिर्फ ख़ुदा से डरना चाहिए था। फिर, जब आखिरकार ज़ैद (मुहम्मद के गोद लिए हुए बेटे) ने उसे तलाक़ दे दी, तो हमने उससे तुम्हारा निकाह करवा दिया। ये उस बात को दिखानें के लिए किया गया के मोमीन मर्दो को अपने गोद लिए हुए बेटों की तलाक़शुदा बीवियों से शादी करने की इजाज़त है। ख़ुदा के हुक्मो पर अमल किया जाएगा।" 33:37

रसूल की बात मानने में शर्त रखी गई है

एक मुकम्मल सूरा इस हक़ीक़त को दिखाया है कि हमें मुहम्मद की सिर्फ उन्ही बातों पर अमल करना चाहिए जो क़ुरान के मुताबिक हैं , ना कि उनके ज़ाती अल्फ़ाज़ या ज़ाती रवैये पर अमल करना चाहिए। ये "हदीस"और "सुन्नत" को मज़हबी तालीमात के जायज़ ज़रियो के तौर पर मानने से खारिज करता है।

एक सूरा जिसका उनवान है "अब्बासा = मुँह बनाना", और एक वाक़िया बयान करता है, जहां मुहम्मद ने एक गरीब अंधे आदमी को नज़र अंदाज़ किया, और एक अमीर आदमी को अपनी पूरी तवज्जो दी:

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

عَبَسَ وَتَوَلّٰىٓ ۙ﴿١﴾ اَنْ جَآءَهُ الْاَعْمٰى ﴿٢﴾ وَمَا يُدْرِيْكَ لَعَلَّهٗ يَزَّكّٰىٓ ۙ﴿٣﴾

اَوْ يَذَّكَّرُ فَتَنْفَعَهُ الذِّكْرٰى ﴿٤﴾ اَمَّا مَنِ اسْتَغْنٰى ۙ﴿٥﴾ فَاَنْتَ لَهٗ تَصَدّٰى ﴿٦﴾

وَمَا عَلَيْكَ اَلَّا يَزَّكّٰى ﴿٧﴾ وَاَمَّا مَنْ جَآءَكَ يَسْعٰى ۙ﴿٨﴾ وَهُوَ يَخْشٰى ۙ﴿٩﴾

فَاَنْتَ عَنْهُ تَلَهّٰى ﴿١٠﴾ كَلَّآ اِنَّهَا تَذْكِرَةٌ ﴿١١﴾ فَمَنْ شَآءَ ذَكَرَهٗ ﴿١٢﴾

उन्होंने (मोहम्मद ने) मुँह बनाया और मुँह फेर लिया, जब अन्धा आदमी उनके पास आया। आपको कैसे मालूम; हो सकता है के वो खुद को पाक करले? या, हो सकता है वो पैगाम को समझे और पैगाम से फ़ायदा करले। जबकि जो अमीर आदमी है, तुमने (मुहम्मद ने) उस पर अपना ध्यान दिया। अगरचे तुम उसके बचने की ज़मानत नहीं दे सकते। लेकिन वो जो तुम्हारे पास बचने की कोशिश में आया था, और सच्चे दिल से एहतराम करता है, तुमने उसे नज़र अंदाज़ किया ये उन लोगो के लिए एक ताकीद हैं, जो याद रखना चाहते है। **80:1-12**

मुहम्मद की परस्तिश

बार-बार ख़ुदा के दावों पर इनकार करना कि **क़ुरान मुक़म्मल, सही, और मज़हबी तालीमात का वाहिद ज़रिया होगा,** और हदीस और सुन्नत के नाम से जानी गई मन-घड़त बातों को मानने का मतलब यही है के आप नबी मुहम्मद की मर्ज़ी के खिलाफ उनकी परस्तिश कर रहे है।

قُلْ لَّوْ كَانَ الْبَحْرُ مِدَادًا لِّكَلِمٰتِ رَبِّیْ لَنَفِدَ الْبَحْرُ قَبْلَ اَنْ تَنْفَدَ
كَلِمٰتُ رَبِّیْ وَلَوْ جِئْنَا بِمِثْلِهٖ مَدَدًا ﴿۱۰۹﴾ قُلْ اِنَّمَآ اَنَا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ
يُوْحٰٓى اِلَیَّ اَنَّمَآ اِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ فَمَنْ كَانَ يَرْجُوْا لِقَآءَ رَبِّهٖ
فَلْيَعْمَلْ عَمَلًا صَالِحًا وَّلَا يُشْرِكْ بِعِبَادَةِ رَبِّهٖٓ اَحَدًا ﴿۱۱۰﴾

"कहो (ऐ मुहम्मद), 'अगर समंदर मेरे रब के अलफ़ाज़ के लिए स्याही होता, तो मेरे रब के अलफ़ाज़ ख़तम होने से पहले समंदर ख़तम हो जाता, यहाँ तक के अगर हम दो-गुना ज़्यादा स्याही भी देते।' कहो (ऐ मुहम्मद), 'मैं तुम्हारे जैसा एक इंसान से ज़्यादा कुछ नहीं हूँ। यह मुझ पर नाज़िल हुआ है कि तुम्हारा ख़ुदा सिर्फ एक ख़ुदा है। इस तरह जो कोई भी अपने रब से मिलने की उम्मीद करता है, वो एक नेक ज़िन्दगी गुज़ारेगा, और **कभी भी अपने रब के साथ किसी और** को शरीक नहीं करेगा।'"

18:109-110

यह आयतें हमें साफ-साफ बताती हैं कि ख़ुदा के पास अल्फाजों की कमी नहीं है; वह हमें इस क़ुरान में वो **<u>सभी अलफ़ाज़</u>** दिए है जो हमारे लिए काफी है, और ये कि हमें मुहम्मद या किसी और के अल्फ़ाज़ की तलब नहीं करना चाहिए, और ये कि मोहम्मद दूसरे इंसानों की तरह एक इंसान है; उनकी बुत-परस्ती नहीं करनी चाहिए (आयत का आखरी हिस्सा देखिए).

क़ुरान : आप मोहम्मद की बुत-परस्ती नहीं करोगे

क़ुरान में सिर्फ दो आयतें है जो नबी मोहम्मद को ऐसे बयान करती है "तुम्हारी ही तरह एक इंसान से ज़्यादा कुछ नहीं।"

<u>क्या यह इत्तेफाक है कि दोनों आयतों के आख़िर में शिर्क पर मनाई की गई हैं ??</u>

पहली आयत पिछले पन्ने पर दिखाई गई है, और दूसरी आयत नीचे दिखाई गई है:

قُلْ اِنَّمَآ اَنَا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ يُوْحٰٓى اِلَيَّ اَنَّمَآ اِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ فَاسْتَقِيْمُوْٓا اِلَيْهِ وَاسْتَغْفِرُوْهُ وَوَيْلٌ لِّلْمُشْرِكِيْنَ ۙ ٦

"कहो (ओ मोहम्मद), 'मैं तुम्हारी तरह एक इंसान से बढ़कर कुछ नहीं हूँ। ये मुझ पर नाज़िल हुआ है की तुम्हारा ख़ुदा सिर्फ **एक ख़ुदा है**। इसलिए, **सिर्फ** उन पर गौर करो, और उनसे माफ़ी माँगो, और **<u>अफसोस है उन शिर्क करने वालों पर।'"</u>**

41:6

सच्चे मोमिन अपने ख़ुदा और उनके बयानों पर ईमान रखते हैं, के **क़ुरान पूरी तरह मुकम्मल, सही और पूरा तफ्सीली है, और मज़हबी हिदायत का वाहिद ज़रिया होगा**। शिर्क करने वाले ही क़ुरान के अलावा कोई और ज़रियो की तलब करेंगे। "हदीस और सुन्नत" को मानना यानी नबी मोहम्मद की मर्ज़ी के खिलाफ उनकी बुत-परस्ती करना है।

क़ुरान का गलत इस्तेमाल

اِنَّ اللّٰهَ وَمَلٰٓئِكَتَهٗ يُصَلُّوْنَ عَلَى النَّبِيِّ ۭ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا صَلُّوْا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوْا تَسْلِيْمًا ۝٥٦

"ख़ुदा और उनके फरिश्ते नबी की हौसला अफ़ज़ाई करते हैं। ऐ ईमान वालो, तुम भी उनकी हौसला अफ़ज़ाई करो और उनकी पूरी तरह से मदद करो।" 33:56

इस आयत का अब तक पूरे क़ुरान में सबसे ज़्यादा गलत इस्तेमाल किया गया हैं। इस आयात के शैतानी बिगाड़, जहालत और बुत-परस्ती, की वजह से लाखों मुस्लमान ख़ुदा के शान की तस्बीह करने के बजाए, नबी की मर्ज़ी के खिलाफ नबी की शान की तस्बीह करते हैं।

जो लोग दिन-रात ख़ास तौर पर इस आयत की तस्बीह करते हैं वो पूरी तरह से दो अहम हकीकतों से अनजान है:

(1) लफ्ज़ "नबी" जब पैगम्बर मुहमद के हवाले इस्तेमाल होता है वो **हमेशा** उनके ज़िंदा रहने पर इस्तेमाल किया गया है, उनके गुज़रने के बाद नहीं।

(2) इसी सूरा में, और इस आयत से आगे के 13 आयतों में, हमें पता चलता है कि ख़ुदा और उनके फरिश्ते **सारे ईमान वालों** के लिए यही इज़्ज़त-अफ़ज़ाइ करते हैं।

هُوَ الَّذِیۡ یُصَلِّیۡ عَلَیۡکُمۡ وَ مَلٰٓئِکَتُہٗ لِیُخۡرِجَکُمۡ مِّنَ الظُّلُمٰتِ اِلَی النُّوۡرِ ؕ وَ کَانَ بِالۡمُؤۡمِنِیۡنَ رَحِیۡمًا ﴿۴۳﴾

"ख़ुदा और उनके फरिश्ते ईमान वालों की हौसला अफ़ज़ाई करते हैं, उन्हें अंधेरे से निकाल कर रौशनी में लाने के लिए।" 33:43

क़ुरान का गलत इस्तेमाल

सूरा 9 की आयत 103 **"सल्लू"** और **"यूसल्ली"** अलफ़ाज़ के माइनो के आगे और भी खुलासा करती है। इस आयत में, हम देखते हैं कि पैगंबर को ईमान वालों के लिए **"यूसल्ली"** करने का हुक्म दिया गया है, जैसा कि सूरा 33 की आयत 56 में जिस तरह उन्हें पैगंबर के लिए करने को कहा गया था (देखिए पेज 26).

خُذْ مِنْ اَمْوَالِهِمْ صَدَقَةً تُطَهِّرُهُمْ وَتُزَكِّيْهِمْ بِهَا وَصَلِّ عَلَيْهِمْ اِنَّ صَلٰوتَكَ سَكَنٌ لَّهُمْ وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿١٠٣﴾

"(ऐ मुहम्मद) खैरात के लिए उनके पैसे का एक हिस्सा ले लो, उनको पाक और साफ करने के लिए, और उनकी (सल्ली अलेहीम) हौसला अफज़ाइ करो इसलिए कि तुम्हारी हौसला अफज़ाइ उन्हें दिलासा देगी। ख़ुदा सुनने वाले और सब कुछ जानने वाले हैं।" 9:103

इस तरह, इस इज़हार का असल मायना "होसला अफज़ाइ" है, और **ना कि** "दिन और रात तारीफ" जैसा की क़ुरान का गलत इस्तेमाल करने वालों ने बताया है।

<u>खुलासा</u>

1. ख़ुदा और उसके फरिश्ते ईमान वालों का हौसला अफ़ज़ाइ करते हैं, उन्हें अंधेरे से निकाल कर रौशनी में लाने के लिए (33:43).

2. ख़ुदा और उनके फरिश्ते पैगंबर को उनकी ज़िन्दगी के दौरान उन्हें सही रास्ते पर रखने के लिए हौसला अफ़ज़ाइ करते हैं (33:56).

3. ईमान वालों से कहा जाता है कि वो पैगंबर की ज़िन्दगी में उनका साथ दें (33:56), और पैगंबर भी ईमान वालों के लिए ऐसा ही करें (9:103).

क़ुरान का गलत इस्तेमाल

لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِيْ رَسُوْلِ اللّٰهِ اُسْوَةٌ حَسَنَةٌ لِّمَنْ كَانَ يَرْجُوا اللّٰهَ وَالْيَوْمَ الْاٰخِرَ وَذَكَرَ اللّٰهَ كَثِيْرًا ﴿٢١﴾

"ख़ुदा के रसूल में आपके लिए एक अच्छी मिसाल है; उन लोगों के लिए एक अच्छी मिसाल जो ख़ुदा और आख़िरत की उम्मीद कर रहे हैं, और कसरत से ख़ुदा का ज़िक्र करते हैं।" 33:21

शैतान ने इस आयत को मोहम्मद को बुत बनाने के लिए एक ख़ास दर्जे का दावा करने के लिए और नबी की सुन्नत की ज़रूरत पर लोगों को मनवाने के लिए इस्तेमाल किया।

इसमें कोई शक नहीं कि पैगंबर मोहम्मद हमारे लिए बेहतरीन मिसाल है और उनकी मिसाल तभी क़ायम होती है जब क़ुरान को सब से ऊपर रखा जाए, और क़ुरान के सिवा कुछ नहीं।

ज़ाहिर है, जो लोग शैतान के जाल में फस गए हैं, वो इस हकीकत से अनजान है कि क़ुरान में **इब्राहिम को भी उन्ही अल्फ़ाज़ में बयान किया गया है;** लफ्ज़ बा लफ्ज़।

قَدْ كَانَتْ لَـكُمْ اُسْوَةٌ حَسَنَةٌ فِىْٓ اِبْرٰهِيْمَ وَالَّذِيْنَ مَعَهٗ ۚ ٤
لَقَدْ كَانَ لَـكُمْ فِيْهِمْ اُسْوَةٌ حَسَنَةٌ لِّمَنْ كَانَ يَرْجُوا اللّٰهَ وَالْيَوْمَ الْاٰخِرَ ۚ وَمَنْ يَّتَوَلَّ فَاِنَّ اللّٰهَ هُوَ الْغَنِىُّ الْحَمِيْدُ ٦

"इब्राहिम में और वो जो उनके साथ ईमान लाए उन में तुम्हारे लिए एक अच्छी मिसाल है उन लोगो के लिए जो ख़ुदा और आख़िरत की उम्मीद कर रहे है।" 60:4,6

क्या ख़ुदा मुहम्मद से नफ़रत करते है???

बिल्कुल नहीं। लेकिन जब आप वोही बातें दोहराते हैं जो ख़ुदा ने क़ुरान में मोहम्मद के बारे में कहीं है, तो वह आप पर मोहम्मद से नफरत करने का इल्ज़ाम लगाते हैं। इसी तरह, जब आप ईसाइयों को बताते हैं कि ईसा एक इंसान और ख़ुदा के रसूल है, तो वो आप पर ईसा से नफरत करने का इल्ज़ाम लगाते हैं।

मुहम्मद किसी को हिदायत नहीं दे सकते (28:56)

اِنَّكَ لَا تَهْدِیْ مَنْ اَحْبَبْتَ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ یَهْدِیْ
مَنْ یَّشَآءُ وَهُوَ اَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِیْنَ ﴿۵۶﴾

"तुम (मोहम्मद) उन लोगों को हिदायत नहीं दे सकते जिन से तुम मोहब्बत करते हो। सिर्फ ख़ुदा ही है, वो जिसे चाहते हैं उसे हिदायत देते हैं, क्योंकि वो उन लोगों को खूब जानते हैं जो हिदायत के लायक है।" 28:56

नबी का वाहिद काम बगैर किसी तब्दीली, इज़ाफ़े, कमी या वज़ाहत के क़ुरान को पहुचाना था।

देखिये पेज 36 से 44 तक।

मुहम्मद से सच्ची मोहब्बत

ईसा से सच्ची मोहब्बत करना यानी उन्हें एक इंसान और रसूल के तौर पर जानना है। ईसाई लोग ईसा से बहुत प्यार करते हैं, फिर भी वो उन्हें कयामत के दिन ठुकरा देंगे (मॉथ्युस 7:23 और क़ुरान 5:116).

मुहम्मद से सच्ची मोहब्बत ये है कि उन्हें एक इंसान के तौर पर जानें और उनकी तालीमात पर अमल करें, यानि के, **<u>क़ुरान को क़ायम रखे और क़ुरान के अलावा कुछ नहीं।</u>** जो लोग "<u>हदीस और सुन्ना</u>" को मानते हैं उन्हें मोहम्मद के दुश्मनो का नाम दिया गया है, और मोहम्मद उन्हें क़यामत के दिन ठुकरा देंगे, जैसे कि हम नीचे देखते हैं:

وَقَالَ الرَّسُوْلُ يٰرَبِّ اِنَّ قَوْمِى اتَّخَذُوْا هٰذَا الْقُرْاٰنَ مَهْجُوْرًا ﴿٣٠﴾
وَكَذٰلِكَ جَعَلْنَا لِكُلِّ نَبِيٍّ عَدُوًّا مِّنَ الْمُجْرِمِيْنَ وَكَفٰى بِرَبِّكَ
هَادِيًا وَّنَصِيْرًا ﴿٣١﴾

"(आख़िरत के दिन) रसूल कहेंगे, ऐ मेरे रब; मेरे लोगों ने इस क़ुरान को छोड़ दिया है'। हम इस तरह हर नबियों के खिलाफ गुनाहगारों में से दुश्मन कायम करते हैं। तुम्हारा **<u>रब हिदायत</u>** और मददगारी के लिए **<u>काफी है।"</u>** 25:30-31

इस बात पर गौर करें कि ऊपर वाली आयत 31 और आयत 112 और सूरा 6 के दरमियान अल्फ़ाज़ एक दूसरे से मिलते जुलते हैं, और खास तौर पर <u>"हदीस"</u> के बारे में बताते हैं।

ख़ुदा ही है जिसने तुम्हें बनाया है; ख़ुदा ही है जो तुम्हें सब कुछ अता करते हैं; ख़ुदा ही है जो तुम्हारी ज़िन्दगी को खत्म करते हैं; ख़ुदा ही है जो तुम्हें फिर से ज़िंदा करते हैं; ख़ुदा ही है जो तुम्हारा हिसाब करते हैं। मोहम्मद इनमें से कुछ नहीं करते (देखिए 30:40).

मुहम्मद आने वाले वक़्त के बारे में कुछ नहीं जानते

قُلْ مَا كُنْتُ بِدْعًا مِّنَ الرُّسُلِ وَمَآ اَدْرِىْ مَا يُفْعَلُ بِىْ وَلَا بِكُمْ اِنْ اَتَّبِعُ اِلَّا مَا يُوْحٰٓى اِلَىَّ وَمَآ اَنَا اِلَّا نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ۝٩

"कहो (ऐ मोहम्मद), 'मैं कोई ऐसी नई चीज़ नहीं लाता जो किसी दूसरे रसूल से मुख्तलिफ हो। मुझे नहीं पता कि मेरे साथ या आपके साथ क्या हो सकता है। मैं सिर्फ उस पर अमल करता हूं जो मुझ पर नाज़िल हुआ है। मैं तो बस खुले तौर पर खबरदार करने वाला हूं।'"

46:9

قُلْ لَّآ اَمْلِكُ لِنَفْسِىْ نَفْعًا وَّلَا ضَرًّا اِلَّا مَا شَآءَ اللّٰهُ ۭ وَلَوْ كُنْتُ اَعْلَمُ الْغَيْبَ لَاسْتَكْثَرْتُ مِنَ الْخَيْرِ ۛ وَمَا مَسَّنِىَ السُّوْۗءُ ۭ اِنْ اَنَا اِلَّا نَذِيْرٌ وَّبَشِيْرٌ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ۝١٨٨

"कहो (ऐ मोहम्मद), 'मैं खुद को भी फायदा या नुकसान करने की कोई ताकत नहीं रखता , सिवाए ख़ुदा की मर्ज़ी के। (ना ही मैं आने वाले वक़्त के बारे मे जानता हूँ); अगर मैं आने वाले वक़्त के बारे में जानता, तो मैं अपनी दौलत में इज़ाफा करता, और मुझे कोई नुकसान न हो पाता। मैं सिर्फ एक खबरदार करनेवाला, और साथ ही ईमान वालो के लिए खुश-खबरी लानेवाला हूँ।'" 7:188

मुहम्मद आने वाले वक़्त के बारे में कुछ नहीं जानते

फिर भी, सैकड़ों "हदीसे" ऐसी है जो आने वाले वक़्त के वाक़ियात को बयान करती है जिनका क़ुरान से कोई लेना-देना नहीं है, और वो जिन्होने हदीसे लिखी है उनकी ज़ाती पेशनगोई को पेश करती है।

सारी "हदीसो" में से सबसे मशहूर हदीस नीचे दिखाई गई है:

عليكم بسنتي وسنة الخلفاء الراشدين من بعدي
(حديث صحيح)

"आप मेरी सुन्नत को और अल-खुलाफा' अल-राशीदीन की सुन्ना को क़ायम रखेंगे जो मेरे बाद आएँगे।"

यह गौर करना चाहिए के नबी के गुज़रने के 200 साल बाद तक अरबी अदब में "अल खुलाफा' अल-राशीदीन" दिखाई नहीं दिए; यह आज के दौर के अल्फ़ाज़ है।

नबी को कैसे पता चला कि उनके बाद उनकी जगह, "खुलफ़ा" लेंगे, और उन्हें कैसे पता चला कि उन्हें "अल-खुलफ़ा अल-राशीदींन" कहा जाएगा?

ये लफ्ज़ "अल-खुलाफा अल-राशीदींन" ख़ास तौर पर उन 4 खलीफाओ के बारे में है: अबू बकर, उमर, उस्मान, और अली। नबी के गुज़र जाने के 2 सदियों बाद तक ये मालूम नहीं था।

सिफारिश की झूठी कहानी

सिफारिश, शैतान की सारी चालों में सबसे असरदार चाल है, जिससे वो लोगों को उनके नबियों को और/या वलियो को बुत बनाने का धोखा देता है।

हालाँकि क़ुरान बार-बार यह बयान करता है के फैसले के दिन कोई सिफारिश नहीं होगी, बहुत से मुसलमानो को "हदीस और सुन्नत" के ज़रिए नबी मोहम्मद को उनकी मर्ज़ी के खिलाफ बुत बनाने के लिए और **सिफारिश** (शफ़ाअत) का तसव्वुर इजाद करने के लिए धोका दिया गया है।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَنْفِقُوْا مِمَّا رَزَقْنٰكُمْ مِّنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَ يَوْمٌ لَّا بَيْعٌ فِيْهِ وَلَا خُلَّةٌ وَّلَا شَفَاعَةٌ ۭ وَالْكٰفِرُوْنَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿٢٥٤﴾

"हमने जो कुछ तुम्हें अता किया है, उसमें से खैरात करो, इससे पहले के वो दिन आए जिसमे में ना कोई सौदा होगा, ना रिश्तेदार की तरफदारी होगी और ना कोई **<u>सिफारिश होगी</u>**।" 2:254

يَعْلَمُ مَا بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ وَ لَا يَشْفَعُوْنَۚ اِلَّا لِمَنِ ارْتَضٰى وَهُمْ مِّنْ خَشْيَتِهٖ مُشْفِقُوْنَ ﴿٢٨﴾

"पैग़म्बर सिर्फ ख़ुदा के हुक्मो पर अमल करते है। ख़ुदा उनकी गुज़री हुए और आगे की ज़िंदगी जानते है **<u>वो किसी की सिफारिश</u> नहीं कर सकते सिवाए उनके जिन्हें ख़ुदा पहले से कुबूल कर चुके है**। नबियों को खुद अपनी तक़दीर की फ़िक्र होती है।" 21:28

मुहम्मद को माबूद बनाना

सिफारिश की झूठी कहानी

क़ुरान के बार-बार दावों के दोहराने के बावजूद की मुहम्मद के पास किसी को फायदा पहुंचाने या किसी को नुकसान पहुंचाने की कोई ताक़त नहीं है (देखिए पेज 25, पेज 26), शैतान कई लोगों को सिफारिश के तसव्वुर के ज़रिये से धोका देने में कामयाब रहा। शैतान ने उसके जाल में फसने वालो को ये यकीन दिलाया के मुहम्मद वाक़ई में उन्हें जहन्नम से बाहर निकालेंगे, और उन्हें जन्नत में दाखिल करेंगे!

बहुत से मुसलमान तो सिफारिश के तसव्वुर को इतना बढ़ा देते है ताकि वो बहुत से वलियो और/या ईमानों को भी शामिल कर सके:

وَيَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَضُرُّهُمْ وَلَا يَنْفَعُهُمْ وَيَقُوْلُوْنَ هٰٓؤُلَآءِ شُفَعَآؤُنَا عِنْدَ اللّٰهِ قُلْ اَتُنَبِّـُٔوْنَ اللّٰهَ بِمَا لَا يَعْلَمُ فِى السَّمٰوٰتِ وَلَا فِى الْاَرْضِ سُبْحٰنَهٗ وَتَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ﴿١٨﴾

"वो ख़ुदा के साथ-साथ उन लोंगों की परस्तिश करते है जिनके पास उन्हें नुकसान पहुचाने या उन्हें फायदा पहुचाने की ताकत नहीं है, और कहते हैं, 'ये ख़ुदा के यहां हमारे सिफारिशी है।' कहो, 'क्या तुम ख़ुदा को किसी ऐसी चीज़ के बारे में बता रहे हो जिसे वो आसमानो या ज़मीन में नहीं जानते? सारी तारीफ उन्ही के लिए, ख़ुदा बहुत आला है उनसे जिन्हें वो उनके साथ शरीक करते हैं।" 10:18

मुहम्मद की परस्तिश

झूठी कहानी: <u>मुहम्मद करेंगे सिफारिश</u>

सिफारिश के तसव्वुर का मतलब ये है कि ख़ुदा के कुछ शरीक है जो लोगो की तरफ से उनसे सिफारिश करते है।

इसलिए, सिफारिश करना शिर्क है, और जो लोग मानते हैं कि मुहम्मद किसी के खातिर ख़ुदा से सिफ़ारिश करेंगे, वो नबी की मर्ज़ी के खिलाफ उनकी बुत-परस्ती कर रहे हैं। शैतानी बिदात जिसे हदीस और सुन्नत के नाम से जाना जाता है उसमें ये बहुत ज़िक्र किया है कि मुहम्मद हमारी सिफ़ारिश करेंगे।

क़ुरान साफ तौर पर सिफ़ारिश पर यक़ीन करने को बुत-परस्ती के तौर पर जानता है, और ऐलान करता है एक **अहम परख**; के जो लोग सिफारिश पर यकीन रखते हैं वो सिर्फ ख़ुदा के बारे में बात नहीं कर सकते; उन्हें अपने माबूदों का ज़िक्र साथ में करना होता है।

وَاِذَا ذُكِرَ اللّٰهُ وَحْدَهُ اشْمَاَزَّتْ قُلُوْبُ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ ۚ وَاِذَا ذُكِرَ الَّذِيْنَ مِنْ دُوْنِهٖٓ اِذَا هُمْ يَسْتَبْشِرُوْنَ ﴿٤٥﴾

"कहो, '**सब सिफारिश** ख़ुदा के हाथ में है। आसमानों और ज़मीन की बादशाही उन्ही की है, फिर तुम उन्ही की तरफ लौटा दिए जाओगे।' जब **सिर्फ ख़ुदा** का ज़िक्र किया जाता है, तो उन लोगों के दिल जो आख़िरत पर ईमान नहीं रखते हैं, वो नफरत से सिकुड़ जाते है। लेकिन जब उनके साथ औरो का ज़िक्र किया जाता है, तो वो मुतमइन हो जाते है।" 39:45

मुहम्मद तुम्हारा हिसाब नही करेंगे

فَاِنَّمَا عَلَيْكَ الْبَلٰغُ وَعَلَيْنَا الْحِسَابُ ﴿٤٠﴾

"(ऐ मुहम्मद) तुम्हारा काम **सिर्फ** इसे (क़ुरान) पहुचाना है, जबकि ये हम हैं जो उनका हिसाब लेंगे।"

13:40

मुहम्मद आपको कोई फायदा या नुकसान नहीं पहुचा सकते

قُلْ لَّاۤ اَمْلِكُ لِنَفْسِىْ ضَرًّا وَّلَا نَفْعًا ﴿٤٩﴾

"कहो (ऐ मुहम्मद), 'मैं अपने आप को भी नुकसान या फायदा पहुँचाने की कोई ताक़त नही रखता।'"

10:49

قُلْ اِنِّىْ لَاۤ اَمْلِكُ لَـكُمْ ضَرًّا وَّلَا رَشَدًا ﴿٢١﴾

"कहो (ऐ मुहम्मद), 'मैं तुम्हारी रहनुमाई कर के भी तुम्हे नुक्सान या फ़ायदा पहुचाने की कोई ताक़त नहीं रखता।'"

72:21

इस तरह, नबी तुम्हें ना ही जन्नत में डाल सकेगे ना ही वो तुम्हें जहन्नम से निकाल सकते है, और ना ही वो तुम्हारा हिसाब करेंगे, ना ही वो तुम्हारा भला कर सकते है, ना ही वो तुम्हे नुकसान पहुचा सकते है; **उनका काम था सिर्फ क़ुरान पहुचाना, क़ुरान के अलावा और कुछ नहीं**। उनसे मोहब्बत करना और उनकी इज़्ज़त करना यानी सिर्फ क़ुरान को मानना है, और उन सभी मन-घड़त बातों को खारिज करना हैं जो उनके नाम पर लिखी गई हैं।

हर रसूल का काम
आप ख़ुदा के सिवा किसी की बुत-परस्ती नहीं करेंगे

ना तो ईसा, ना ही मुहम्मद, चाहते है के उनकी बुत-परस्ती हो। उनका काम सिर्फ **एक ख़ुदा** की इबादत का पैगाम पहुचाना था।

مَآ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ مِنْ رَّسُوْلٍ اِلَّا نُوْحِيْٓ اِلَيْهِ اَنَّهٗ لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنَا فَاعْبُدُوْنِ ﴿٢٥﴾

وَقَالُوا اتَّخَذَ الرَّحْمٰنُ وَلَدًا سُبْحٰنَهٗ ۭ بَلْ عِبَادٌ مُّكْرَمُوْنَ ۙ﴿٢٦﴾

لَا يَسْبِقُوْنَهٗ بِالْقَوْلِ وَهُمْ بِاَمْرِهٖ يَعْمَلُوْنَ ﴿٢٧﴾

يَعْلَمُ مَا بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ وَلَا يَشْفَعُوْنَ ۙ اِلَّا لِمَنِ ارْتَضٰى وَهُمْ مِّنْ خَشْيَتِهٖ مُشْفِقُوْنَ ﴿٢٨﴾

وَمَنْ يَّقُلْ مِنْهُمْ اِنِّىْٓ اِلٰـهٌ مِّنْ دُوْنِهٖ فَذٰلِكَ نَجْزِيْهِ جَهَنَّمَ ۭ كَذٰلِكَ نَجْزِي الظّٰلِمِيْنَ ﴿٢٩﴾

"जितने भी रसूल हम ने तुमसे पहले भेजे थे, उन सभी को ये हिदायत की गई थी, कि मेरे सिवा और कोई ख़ुदा नहीं है; तुम सिर्फ मेरी ही इबादत करोगे। फिर उन्होंने कहा, 'ख़ुदा जो सबसे मेहरबान हैं उन्होंने एक बेटे को जन्म दिया है।' उनकी बड़ी शान है ; सभी रसूल इज़्ज़तदार बंदो से ज़्यादा कुछ नहीं है। वो अपनी तरफ से नहीं बोलते; वो सिर्फ उनके हुक्मों पर अमल करते हैं। वो उनकी गुज़री हुई और आगे की ज़िन्दगी जानते हैं, वो किसी की सिफारिश नहीं कर सकते सिवाए उनके जिनको ख़ुदा पहले से कबूल कर चुके हैं। रसूलो को खुद अपनी तक़दीर की फिक्र होती है। और, अगर उनमें से कोई भी ख़ुदा के साथ ख़ुदा होने का दावा करता है, तो हम उसे जहन्नुम में सज़ा देंगे; इस तरह हम गुनाहगारों को सज़ा देते हैं।"

21:25-29

नबी का वाहिद काम : क़ुरान पहुचाना

बार-बार क़ुरान इस बात पर ज़ोर देने के लिए "दोहरी मनफ़ी (डबल नेगेटिव)" का इस्तेमाल करता है कि मोहम्मद का क़ुरान पहुचाने के **अलावा** कोई और काम **नहीं** था:

إِن عَلَيكَ إِلَّا البَلٰغُ ﴿٤٨﴾

"(क़ुरान) पहुचाने के अलावा तुम्हारा कोई और काम नहीं है" 42:48

فَإِنَّمَا عَلَيْكَ الْبَلٰغُ وَ عَلَيْنَا الْحِسَابُ ﴿٢١﴾

"तुम्हारा काम सिर्फ पहुचाना है (क़ुरान), उनका हिसाब हम लेंगे।" 13:40

مَا عَلَى الرَّسُوْلِ اِلَّا الْبَلٰغُ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ مَا تُبْدُوْنَ وَمَا تَكْتُمُوْنَ ﴿٢١﴾
قُلْ لَّا يَسْتَوِى الْخَبِيْثُ وَالطَّيِّبُ وَلَوْ اَعْجَبَكَ كَثْرَةُ
الْخَبِيْثِ فَاتَّقُوا اللّٰهَ يٰٓاُولِى الْاَلْبَابِ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿١٠٠﴾

"रसूल का काम पहुचाने (क़ुरान) के **<u>अलावा</u>** और कुछ **<u>नहीं</u>** है**,** ख़ुदा जानते हैं तुम जो ऐलान करते हो, और जो भी तुम छुपाते हो। कहो, 'अच्छाई और बुराई एक जैसे नहीं होते भले ही बुराई की ज़्यादा तादाद तुम्हें लुभाए।' इसलिए, ख़ुदा का इहतिराम करो, ऐ समझदारो, ताकि तुम कामयाब हो सको।" 5:99-100

अफसोस की बात है, वो लोग जो ये मानने से इनकार करते हैं कि **<u>सिर्फ क़ुरान ही मज़हबी हिदायत का ज़रिया है</u>**, उनकी गिनती ईमान वालों से बहुत ज़्यादा है (देखे 16:35, 82; 24:54; 29:18; 36:17& 64:12).

मुहम्मद क़ुरान की सफाई नहीं देते, तर्जुमा नहीं करते या पेशनगोई नहीं करते; सिर्फ क़ुरान को पहुचाते और उसपर अमल करते है

हदीस और सुन्नत की वकालत करने वाले दावा करते है की क़ुरान को समझने के लिए हदीस और सुन्नत की ज़रूरत है।

हांलाकि, क़ुरान सिखाता है की ख़ुदा क़ुरान के सीखाने वाले हैं; और ये कि ख़ुदा क़ुरान को मोमिनो के दिलो में डाल देंगे चाहे उनकी मादरी ज़ुबान कोई और हो; और ये की मुहम्मद क़ुरान को नहीं समझाएंगे। दस्तावेज़ नीचे दिखाए गए है।

ख़ुदा क़ुरान के सीखानेवाले हैं

اَلرَّحْمٰنُ ۙ﴿۱﴾
عَلَّمَ الْقُرْاٰنَ ﴿۲﴾

55:1-2

وَلَوْ جَعَلْنٰهُ قُرْاٰنًا اَعْجَمِيًّا لَّقَالُوْا لَوْلَا فُصِّلَتْ اٰيٰتُهٗ ؕ
ءَاَعْجَمِىٌّ وَّعَرَبِىٌّ ؕ قُلْ هُوَ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا هُدًى وَشِفَآءٌ ؕ
وَ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ فِىْٓ اٰذَانِهِمْ وَقْرٌ وَّهُوَ عَلَيْهِمْ عَمًى ؕ
اُولٰٓئِكَ يُنَادَوْنَ مِنْ مَّكَانٍ بَعِيْدٍ

"चाहे ये गैर-अरबी में नाज़िल हुआ हो या अरबी में, कहो,'जो ईमान वाले हैं, उनके लिए यह एक हिदायत और शिफा है। और जो ईमान नहीं रखते, वो इस की तरफ बहरे और अंधे हैं।'"

41:44

لَا تُحَرِّكْ بِهٖ لِسَانَكَ لِتَعْجَلَ بِهٖ ﴿١٦﴾ اِنَّ عَلَيْنَا جَمْعَهٗ وَقُرْاٰنَهٗ ﴿١٧﴾
فَاِذَا قَرَاْنٰهُ فَاتَّبِعْ قُرْاٰنَهٗ ﴿١٨﴾ ثُمَّ اِنَّ عَلَيْنَا بَيَانَهٗ ﴿١٩﴾

"(ऐ मोहम्मद) क़ुरान को समझाने में जल्दबाजी ना करें। यह हम हैं जो इसे क़ुरान के तौर पर इखट्टा करेंगे। जब हम इसे सुनाएंगे, तो तुम्हे इसपर अमल करना होगा। फिर, यह हम ही हैं जो इसे समझाएंगे।"

75:16-19

हदीस और सुन्नत पर चलने वाले खुद अपनी तालीमों पर नहीं चलते

हदीस की सबसे ऐतमाद के क़ाबिल किताबे, यानी, मुस्लिम और इबने-हंबल, ये बयान करती है के नबी ने हुक़्म दिया था कि कोई भी उनसे **क़ुरान के अलावा** और कुछ ना लें। ये **हदीस** अरबी ज़ुबान में नीचे दिखाई गई हैं:

« السابع – النهي عن كتابة غير القرآن »

عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ : قَالَ رَسُولُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ
عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : « لَا تَكْتُبُوا عَنِّي شَيْئًا سِوَى الْقُرْآنِ . مَنْ كَتَبَ شَيْئًا
سِوَى الْقُرْآنِ فَلْيَمْحُهُ »[1] .

(احمد جـ ١ ص ١٧١ ومسلم)

"अबी सईद अल-ख़ुदारी - ख़ुदा उनसे राज़ी हो - ने बताया कि ख़ुदा के रसूल - ख़ुदा उनका दर्ज़ा बुलन्द करें और उनको सलामत रखें - ने कहा था कि, 'क़ुरान के अलावा मेरी तरफ से कुछ ना लिखना। कोई भी जिसने **क़ुरान के अलावा** कुछ भी लिखा है इसे मिटाना होगा।'" !!!

इस तरह उनकी अपनी तालीमात के हिसाब से,

वो नबी की नाफरमानी करते है

हैरत अंगेज़ हक़ीक़त: वो खुद अपनी ही तालीमात पर अमल नहीं करते

हदीस के सबसे "एतमाद" वाले ज़रियो के मुताबिक, नबी ने कभी अपना इरादा नहीं बदला की उनकी तरफ से सिर्फ क़ुरान ही लिखा जाए:

عَنْ عَبْدِ الْمُطَّلِبِ بْنِ عَبْدِ اللهِ قَالَ : [دَخَلَ زَيْدُ بْنُ ثَابِتٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَلَى مُعَاوِيَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ ، فَحَدَّثَهُ حَدِيثاً ، فَأَمَرَ إِنْسَاناً أَنْ يَكْتُب ، فَقَالَ زَيْدٌ : إِنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ نَهَى أَنْ نَكْتُب شَيْئاً مِنْ حَدِيثِهِ ، فَمَحَاهُ]

ज़ैद इबने ताबित (पैगंबर के सबसे करीबी वही लिखने वाले) ने खलीफा मुआविया से मुलाकात के लिए गए (पैगंबर के गुज़र जाने के 30 से भी ज़्यादा सालो बाद), और उन्हें पैगंबर के बारे में एक कहानी सुनाई। मुआविया को कहानी पसंद आई और उन्होनें किसी को इसे लिखने का हुक्म दिया। लेकिन ज़ैद ने कहा,"ख़ुदा के रसूल ने हमें हुक्म दिया की हम कभी भी उनकी हदीस नहीं लिखेंगे" (इबने हनबल ने इत्तला दी).

वो अपने ही मन-घड़त बुत की नाफरमानी करते है!!

क़ुरान: क्या उनके पास कोई ऐसी किताब है जहाँ <u>वो कुछ भी चाहे वो पा सकते हैं?</u>

जब आप <u>हदीस और सुन्नत</u> के मानने वालो के साथ पिछले पेज पर दिखाई गई <u>हदीस</u> का सामना करते हैं, तो वो क़ुबुल करते हैं की ऐसी <u>हदीस</u> मौजुद है। वो अपनी तालीमात पर अमल करने में अपनी नाकामी को इस हकीकत से समझाते है की ऐसी भी "सही" <u>हदीसे</u> मौजूद है जहां नबी ने अपनी <u>हदीसो</u> को लिखने का हुकुम दिया था!!!

क़ुरान ऐसे लोगों को "मुजरिमो" के तौर पर बयान करता है और पुछता है:"क्या उनके पास कोई ऐसी 'किताब' है जिसमें वो अपनी ख़्वाहिश के मुताबिक कुछ भी पा सकते हैं???"

اَفَنَجْعَلُ الْمُسْلِمِيْنَ كَالْمُجْرِمِيْنَ ﴿٣٥﴾ مَا لَكُمْ كَيْفَ تَحْكُمُوْنَ ﴿٣٦﴾
اَمْ لَكُمْ كِتٰبٌ فِيْهِ تَدْرُسُوْنَۙ ﴿٣٧﴾ اِنَّ لَكُمْ فِيْهِ لَمَا تَخَيَّرُوْنَ ﴿٣٨﴾

"क्या हम मुसलमानों के साथ मुजरिमो जैसा सलूक करें? क्या हो गया है तुम्हारी समझ को? **क्या उनके पास कोई ऐसी किताब है जिसमें वो अपनी ख़्वाहिश के मुताबिक कुछ भी पा सकते हैं?**"

68:35-38

हदीस और सुन्नत दोनों ही क़ुरान के इस बयान पर बिलकुल सही बैठते है: के एक “ऐसी किताब जहा तुम जो कुछ चाहो पा सकते हो।”

हदीस और सुन्नत के मन-घड़त और मुखालिफ करने वाले मिज़ाज को सभी लोग मानते है।

उनका पसंदीदा सवाल

अगर क़ुरान मुक़म्मल और पूरी तरह तफ्सीली है (जैसे ख़ुदा कहते हैं), तो हम नमाज़ (सलात) का तरीका कहाँ देखे?

यह मशूर सवाल ये ज़ाहिर करता है के **उनको क़ुरान का मुकम्मल तौर पर इल्म नहीं** है और अन्जाने में ख़ुदा के बार-बार दोहराए हुए बयान को गलत साबित करते है के क़ुरान "मुक़म्मल" और "पूरा तफ्सीली" है।

क्यों कि क़ुरान सीधे सीधे अल्फाज़ो में सीखाता है की इब्राहीम इस्लाम के बानी (फाउंडर) है जैसा कि आज इस पर अमल किया जाता है। अगर ऐसा है तोह इब्राहिम ने बतौर एक मुसलमान के हमारी रोज़-मर्रा ज़िन्दगी में क्या किरदार अदा किए ??

क़ुरान सिखाता है कि **इस्लाम के सभी मज़हबी तरीके (सलात, ज़कात, रोज़े और हज) हमारे पास इब्राहीम से आएँ हैं, पीढ़ी दर पीढ़ी।**

इस तरह, आज का इस्लाम अपनी मुकम्मल शक्ल में, जैसे के आज अमल किया जाता है, वो इन दो चीज़ो पर बसा हुआ है:

(1) **क़ुरान**: मुहम्मद के ज़रिए दिया गया और

(2) **मज़हबी तरीके**: इब्राहीम के ज़रिए।

इस्लाम में सभी मज़हबी तरीके मुहम्मद से पहले भी मौजूद थे।

मुहम्मद का **काम सिर्फ़** क़ुरान को पहुँचाना था (देखिए पेज 39-44)

इब्राहीम: इस्लाम की बुनियाद रखने वाले

इब्राहीम ही सबसे पहले थे जिन्हे **इस्लाम** का तस्व्वुर मिला, और पहले थे जिन्होने "मुसलमान" लफ्ज़ का इस्तेमाल किया। (देखिए 2:131)

وَجَاهِدُوْا فِى اللّٰهِ حَقَّ جِهَادِهٖ هُوَ اجْتَبٰىكُمْ وَمَا جَعَلَ عَلَيْكُمْ فِى الدِّيْنِ مِنْ حَرَجٍ مِلَّةَ اَبِيْكُمْ اِبْرٰهِيْمَ هُوَ سَمّٰىكُمُ الْمُسْلِمِيْنَ ۙ مِنْ قَبْلُ وَفِىْ هٰذَا لِيَكُوْنَ الرَّسُوْلُ شَهِيْدًا عَلَيْكُمْ وَتَكُوْنُوْا شُهَدَآءَ عَلَى النَّاسِ فَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ وَاعْتَصِمُوْا بِاللّٰهِ هُوَ مَوْلٰىكُمْ فَنِعْمَ الْمَوْلٰى وَنِعْمَ النَّصِيْرُ

"तुम ख़ुदा की राह में ऐसे जद्दोजहद करो, जैसे कि तुम्हें करनी चाहिए। उन्होंने तुम्हे चुन लिया है , और तुम्हारे मज़हब में किसी तरह की मुश्किल नहीं रखी है; जो की **तुम्हारे वालिद इब्राहीम का मज़हब हैं**। इब्राहीम वोही है जिन्होने शुरुआत में आप को 'मुसलमान' नाम दिया था। इस तरह, रसूल तुम्हारे दरमियान गवाही देते है जिस तरह तुम लोगो के दरमियान गवाही देते हो। इसलिये, तुम नमाज़ (सलात) क़ायम करो, ज़कात दो, और ख़ुदा के रास्ते पर डटे रहो; वो तुम्हारा रब है; सबसे अच्छा ख़ुदा, और सबसे अच्छा मददगार।" 28:78

इस तरह, अगर इब्राहीम ने इस्लाम की बुनियाद रखी है, तो क्या हमारी इस्लामी ज़िन्दगी में उन्होने कोई किरदार अदा किया???

जवाब ये है: "हाँ; उन्होनें **मज़हबी तरीके** (सलात, ज़कात, रोज़ा, और हज) बता कर अपना किरदार अदा किया।"

इस्लाम इब्राहीम का मज़हब है

जबकि मुहम्मद का मकसद, वाहिद मकसद, क़ुरान पहुचाना था, **सभी मज़हबी तरीक़े इब्राहीम के ज़रीए आएँ।**

وَقَالُوْا كُوْنُوْا هُوْدًا اَوْ نَصٰرٰى تَهْتَدُوْا ۗ قُلْ بَلْ مِلَّةَ اِبْرٰهٖمَ حَنِيْفًا ۗ وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿١٣٥﴾

"उन्होने कहा, 'हिदायत पाने के लिए तुम्हें यहूदी या ईसाई होना होगा कहो, 'हम इब्राहीम के मज़हब पर चलते हैं, एक ख़ुदा की इबादत; उन्होने कभी भी बुत-परस्ती नहीं किये थे।'" 2:135

مَا كَانَ اِبْرٰهِيْمُ يَهُوْدِيًّا وَّلَا نَصْرَانِيًّا وَّ لٰكِنْ كَانَ حَنِيْفًا مُّسْلِمًا وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿٦٧﴾ اِنَّ اَوْلَى النَّاسِ بِاِبْرٰهِيْمَ لَلَّذِيْنَ اتَّبَعُوْهُ وَهٰذَا النَّبِىُّ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَاللّٰهُ وَلِىُّ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٦٨﴾

"इब्राहीम ना तो यहूदी थे, ना ही इसाई; वो एक ख़ुदा को मानने वाले; एक मुसलमान; वो कभी भी बुत-परस्त नहीं थे। इब्राहीम की पैरवी करने के सबसे ज़्यादा हक़दार वो लोग हैं जिन्होने उनकी, और इस नबी (मुहम्मद) की पैरवी किए, और वो जो ईमान लाएं। ख़ुदा ईमान वालो के रब है।" 3:67-68

मुहम्मद इब्राहीम के तरीके पर चलते थे

ثُمَّ اَوْحَيْنَاۤ اِلَيْكَ اَنِ اتَّبِعْ مِلَّةَ اِبْرٰهِيْمَ حَنِيْفًا ؕ وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿۱۲۳﴾

"फिर हमने वही की तुम्हारी तरफ (ऐ मुहम्मद) के मज़हब पर चलिए इब्राहीम के, एक ख़ुदा की इबादत; उन्होने कभी भी बुत-परस्ती नहीं किए थे। 16:123

सही तरह से सोचिए, अगर मुहम्मद इब्राहीम के तरीके पर चलते थे, और हम मुहम्मद के तरीको पर चलते हैं, तो इसका मतलब यही हुआ के हम इब्राहीम के तरीको पर चलते हैं। तो फिर हमने इब्राहीम से क्या सीखा???

क़ुरान सिखाता है की हमने इस्लाम के सभी मज़हबी तरीके इब्राहीम से सीखे। इसमें नमाज़, ज़कात, रोज़ा और हज शामिल हैं।

लिहाज़ा, इस्लाम की बुनियाद दो चीज़ो पर है

(1) क़ुरान: मुहम्मद के ज़रिए

(2) मज़हबी तरीके: इब्राहीम के ज़रिए

मुहम्मद के दुश्मन भी नमाज़ पढते थे

मुहम्मद के दौर से पहले और उसके दौरान पूरा अरब मुआशरा इब्राहीम के मज़हब पर चलता था। इस तरह, अबू लहब, अबू जहल, और कुरैश के बुत-परस्त लोग **पाँच वक्त की नमाज़** अदा करते थे ठीक उसी तरह करते थे जैसे हम आज करते हैं, फ़र्क़ सिर्फ ये था कि वो क़ुरान के फ़ातिहा के बदले इब्राहिमी फ़ातिहा पढ़ते थे।

وَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيُعَذِّبَهُمْ وَاَنْتَ فِيْهِمْ وَمَا كَانَ اللّٰهُ مُعَذِّبَهُمْ وَهُمْ يَسْتَغْفِرُوْنَ ﴿٣٥﴾

وَمَا لَهُمْ اَلَّا يُعَذِّبَهُمُ اللّٰهُ وَهُمْ يَصُدُّوْنَ عَنِ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ وَمَا كَانُوْٓا اَوْلِيَآءَهٗ ۭ اِنْ اَوْلِيَآؤُهٗٓ اِلَّا الْمُتَّقُوْنَ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٣٦﴾

وَمَا كَانَ صَلَاتُهُمْ عِنْدَ الْبَيْتِ اِلَّا مُكَاۗءً وَّتَصْدِيَةً ۭ فَذُوْقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُوْنَ ﴿٣٧﴾

"जब तक तुम (मुहम्मद) उनके बीच थे, ख़ुदा उन्हें सज़ा नहीं देने वाले थे। ख़ुदा उनको सज़ा देने वाले नहीं थे जब वो माफ़ी मांग रहे हो। फिर भी, वो लोगो को मुक़द्दस मस्जिद से हटाने पर ख़ुदा की सज़ा के पूरी तरह हकदार थे, हालाँकि वो इस के रखवाले नहीं थे; सिर्फ नेक लोग ही उसके रखवाले हैं, लेकिन उनमें से अक्सर नहीं जानते। इबादत-गाह (काबा) में **उनकी नमाज़े** धोखा और नफ़रत से बढ़कर कुछ नहीं थी। इसलिए, अपने कुफ्र की सज़ा भुगतें।" 8:33-35

मुहम्मद से पहले भी मुक़द्दस महीनो को मनाया गया

इस्लाम में चार मुकद्दस महीने मुहम्मद के ज़माने से पहले माने जाते थे। यह बात आगे साबित करती है कि इस्लाम के सभी मज़हबी तरीको की शुरुआत न तो नबी मुहम्मद ने शूरू किए और ना ही सिखाए; उनका एक ही मकसद क़ुरान पहुँचाना था।

اِنَّ عِدَّةَ الشُّهُوْرِ عِنْدَ اللّٰهِ اثْنَا عَشَرَ شَهْرًا فِیْ كِتٰبِ اللّٰهِ یَوْمَ خَلَقَ
السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ مِنْهَاۤ اَرْبَعَةٌ حُرُمٌ ؕ ذٰلِكَ الدِّیْنُ الْقَیِّمُ ۙ فَلَا تَظْلِمُوْا فِیْهِنَّ
اَنْفُسَكُمْ وَقَاتِلُوا الْمُشْرِكِیْنَ كَآفَّةً كَمَا یُقَاتِلُوْنَكُمْ كَآفَّةً وَاعْلَمُوْۤا اَنَّ اللّٰهَ
مَعَ الْمُتَّقِیْنَ ﴿۳۶﴾
اِنَّمَا النَّسِیْٓءُ زِیَادَةٌ فِی الْكُفْرِ یُضَلُّ بِهِ الَّذِیْنَ
كَفَرُوْا یُحِلُّوْنَهٗ عَامًا وَّیُحَرِّمُوْنَهٗ عَامًا لِّیُوَاطِـُٔوْا عِدَّةَ مَا حَرَّمَ
اللّٰهُ فَیُحِلُّوْا مَا حَرَّمَ اللّٰهُ زُیِّنَ لَهُمْ سُوْٓءُ اَعْمَالِهِمْ وَاللّٰهُ لَا
یَهْدِی الْقَوْمَ الْكٰفِرِیْنَ ﴿۳۷﴾

"ख़ुदा के मुताबिक महीनों की गिनती 12 है, जैसा के ख़ुदा के सहीफो में दिखाया गया है, जिस दिन से उन्होंने आसमानो और ज़मीन को बनाया। उनमें से 4 मुकद्दस है। ये सही मज़हब है। इसलिए इन 4 महीनो में अपनी जानो पर ज़ुल्म ना करो। लेकिन तुम मुशरिको से लड़ सकते हों अगर वो तुम पर हमला करें, और जान लो की ख़ुदा नेक लोगो के साथ है। मुकद्दस महीनो को बदलने का रिवाज़ काफिराना अमल है। इस तरह उन लोगो ने मुक़द्दस महीनो को तबदील कर दिया, उनकी एक साल खिलाफ वर्ज़ी करते हुए और अगले साल को मुक़द्दस बनाते हुए, इस तरह के जैसे के ख़ुदा की तरफ से क़ायम करदा गिनती को बरक़रार रख रहे हो ....."

9:36-37

आज के मुशरिक बा मुक़ाबला क़ुरैश के ज़माने के मुशरिक

आज लाखों "मुसलमान" उसी तरह का शिर्क करते है जो मुहम्मद से पहले कुरैश के ज़माने में होता था।

मिस्र, ईरान, पाकिस्तान, भारत और बाकी देशो में लाखो "मुसलमान" मस्ज़िद में नमाज़ पढ़ते हैं। उनकी नमाज़ बेशक़ ख़ुदा के लिए है। अपनी नमाज़ खत्म करने के बाद, वो पीर/बाबा की कबर पर जाते हैं और उनसे सेहत, दौलत और/या औलाद के लिए दुआ करते हैं।

कुरैश के बुत-परस्त भी पांच वक़्त की नमाज़ ठीक ऐसे ही अदा करते थे, जैसे के हम आज करते हैं, लेकिन वो लोग सेहत, दौलत और/या औलाद के लिए उनके बुत अल्लात, अल-'उज़्ज़ाह, मनात, वगैरा के पास जाया करते थे।

इस तरह लाखो मुसलमानों की तरफ से खुले आम हो रही बुत-परस्ती आज से पहले और मुहम्मद के दौर में कुरैश की बुत-परस्ती से मिलती झुलती है, सिर्फ बुत अलग है।

यहूदी और ईसाई के छोटे हिस्से को छोड़कर, मुहम्मद की रिसालत से पहले का अरब मुआशरा इब्राहीम के मज़हब पर चलता था। उन्होने इस्लाम के सभी मज़हबी फ़राइज़ पर अमल किया। उनकी नमाज़े ठीक हमारी जैसी ही थी। लेकिन वो बुत-परस्ती भी करते थे। आज कल "मुसलमान" अवाम पैगम्बर को उनकी मर्ज़ी के खिलाफ बुत बनाकर, उनके पीरो और बाबाओ या ईमानो को बुत बनाकर, और क़ुरान के अलावा दूसरे ज़रियाओ की पैरवी करते हुए बुत-परस्ती का अमल करते है (देखिए पेज 7 और 8).

"तुम नमाज़ की पाबन्दी करो"

ये हुक़्म क़ुरान नाज़िल होने के पहले कुछ हफ़्तों ही के दौरान जारी किया गया था।

<u>क्या इस बात का कोई मतलब बनता है की ख़ुदा कुछ ऐसा हुक़्म जारी करेंगे जिसके बारे में पहले से इल्म नहीं था??</u>

وَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ وَاَقْرِضُوا اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا
وَمَا تُقَدِّمُوْا لِاَنْفُسِكُمْ مِّنْ خَيْرٍ تَجِدُوْهُ عِنْدَ اللّٰهِ هُوَ خَيْرًا وَّاَعْظَمَ اَجْرًا
وَاسْتَغْفِرُوا اللّٰهَ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٢٠﴾

"...और नमाज़ और ज़कात क़ायम रखो, और ख़ुदा को नेकी का क़र्ज़ दो। तुम अपनी रूह के लिए जो कुछ भी आगे भेजोगे, तुम ख़ुदा के पास बेहतर और कई गुना ज़्यादा पाओगे और ख़ुदा से माफी माँगो; ख़ुदा माफ करने वाले और रहम वाले हैं।" 73:20

लफ्ज़ 'नमाज़' बहुत मखसूस है और इसका मतलब सिर्फ एक चीज है, यानी, रुकू और सजदा करने के मखसूस तरीकों पर अमल करना। ये पूरे क़ुरान में, सभी ज़मानो में, और किसी भी नबी, रसूल, वग़ैरा के बारे में सच है।

इस्लाम के सभी मज़हबी तरीक़े (नमाज़ ज़कात रोज़ा हज)
इब्राहीम के ज़रिए हम तक पहुचे

2:128 में हम देखते हैं की इब्राहीम और इस्माइल ख़ुदा से इल्तिजा करते है कि उनको "**इस्लाम के मज़हबी तरीक़े**'' सिखाए।

وَاِذْ يَرْفَعُ اِبْرٰهٖمُ الْقَوَاعِدَ مِنَ الْبَيْتِ وَاِسْمٰعِيْلُ رَبَّنَا تَقَبَّلْ مِنَّا اِنَّكَ اَنْتَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿١٢٧﴾

رَبَّنَا وَاجْعَلْنَا مُسْلِمَيْنِ لَكَ وَ مِنْ ذُرِّيَّتِنَآ اُمَّةً مُّسْلِمَةً لَّكَ وَاَرِنَا مَنَاسِكَنَا وَتُبْ عَلَيْنَا اِنَّكَ اَنْتَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ ﴿١٢٨﴾

"जब इब्राहीम ने इस्माइल के साथ मिलकर काबा की बुनियादे उठाई, उन्होनें दुआ की, 'ऐ हमारे रब, हमारे इस काम को कुबुल करें; आप सुनने वाले हैं, सब कुछ जानने वाले हैं। हमारे रब, और हमें आपका फ़र्मां-बरदार बनाए; और हमारी औलादो में से तुम्हारे लिए फ़र्मां-बरदारो की एक कौम हो; **और हमें सिखाइये हमारे मज़हबी फ़राइज़ पर अमल करने के तरीके**, और हमें बचाएं; आप बचाने वाले, रहम वाले हैं।'"

2:127-128

इब्राहीम: पहले (और आखरी) नबी जिन्हे ख़ास मज़हबी तरीके मिले

इब्राहीम से पहले के नबियों और रसूलो को कोई मज़हबी तरीके नहीं दिए गए थे। इंसानी मुआशरा इतना कादिम था, **सिर्फ एक खुदा पे यक़ीन** करना ही निजात के लिए ज़रूरी था। मिसाल के तौर पर सुरा 71 देखें, जिसका उनवान "नूह" है। इसलिए, **मज़हबी तरीको** का ज़िक्र क़ुरान में इब्राहीम के बाद ही दिखाई देता है, उनसे पहले कभी नहीं।

وَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ وَارْكَعُوْا مَعَ الرّٰكِعِيْنَ ﴿٤٣﴾

"(ऐ बनी इज़राईल तुम नमाज़ और ज़कात कायम रखो; तुम उन लोगो के साथ झुको जो झुकते है।" 2:43

وَاِذْ جَعَلْنَا الْبَيْتَ مَثَابَةً لِّلنَّاسِ وَاَمْنًا ۖ وَاتَّخِذُوْا مِنْ مَّقَامِ اِبْرٰهٖمَ مُصَلًّى ۖ وَعَهِدْنَآ اِلٰٓى اِبْرٰهٖمَ وَاِسْمٰعِيْلَ اَنْ طَهِّرَا بَيْتِىَ لِلطَّآئِفِيْنَ وَالْعٰكِفِيْنَ وَالرُّكَّعِ السُّجُوْدِ ﴿١٢٥﴾

"हमने <u>काबा</u> को तमाम लोगो के लिए एक मरकज़ और एक मुक़द्दस मुकाम करार दिया; लिहाज़ा, तुम इब्राहीम के इस मुकाम को एक इबादत-गाह समझो। और हमने इब्राहिम और इस्माइल को मुकर्रर किया की वो मेरे घर को इसकी ज़्यारत करने वालो, इसमे एतिकाफ़ करने वालो और **रुकू** और **सजदा** करने वालो के लिए पाक करें।" 2:125

नमाज़ें मुहम्मद से पहले भी अदा की जाती थी

लेकिन यहूदियों और ईसाइयो ने नमाज़े "छोड़ दी"।

يٰمَرْيَمُ اقْنُتِيْ لِرَبِّكِ وَاسْجُدِيْ وَارْكَعِيْ مَعَ الرّٰكِعِيْنَ ﴿٤٣﴾

"ऐ मरियम, तुम अपने रब की फर्माबारदारी करो, और तुम **सजदा** करो और उनके साथ रुकू करो जो **रुकू** करते हैं।" 3:43

وَّجَعَلَنِيْ مُبٰرَكًا اَيْنَ مَا كُنْتُ وَاَوْصٰنِيْ بِالصَّلٰوةِ وَالزَّكٰوةِ مَا دُمْتُ حَيًّا ﴿٣١﴾

"(ईसा ने कहा) ख़ुदा ने मुझे बरकतों से नवाज़ा है मैं जहा भी जाऊ, और उन्होने मुझे नमाज़ पड़ने और ज़कात देने का हुक्म दिया है जब तक कि मैं ज़िंदा हूँ।" 19:31

فَخَلَفَ مِنْ بَعْدِهِمْ خَلْفٌ اَضَاعُوا الصَّلٰوةَ وَاتَّبَعُوا الشَّهَوٰتِ فَسَوْفَ يَلْقَوْنَ غَيًّا ﴿٥٩﴾

"इसके बाद पीढियाँ आईं जिन्होंने नमाज़ें **छोड़** दी, और अपनी ख़्वाइशों के पीछे चल पढ़े।" 19:59

यहुदी यानि सामरी और ईसाइयो (रूसी ऑर्थोडॉक्स चर्च) में नमाज़ के तरीके मौजूद है। ये बात काबिल ए ज़िक्र है की सामरी यहुदियो ने इंसानों के बनाए हुए तलमूद के हुक्मो को ठुकरा दिया है, और सिर्फ ख़ुदा के कलाम, यानि तोहरा पर अमल करने का फैसला किया (देखिए "द मिथ ऑफ गॉड इंकार्नेट", पेज 117).

नमाज़ और ज़कात हम तक इब्राहीम के ज़रीए पहुची

जो लोग ख़ुदा को मानने से इंकार करते हैं, वो क़ुरान को दावा कर रहे हैं ये पूछ कर "<u>अगर क़ुरान मुक़म्मल हैं और पूरा तफ़सील से है (जैसे बयान किया गया है 6:19, 38, और 114 में), तो हम नमाज़ और ज़कात का तरीका कहा से हासिल कर सकते है?</u> ऐसे लोगो के लिए जो ज़ाहिरी तौर पर जो क़ुरान से दूर है (देखिए 18:57), हम नीचे दी गई क़ुरानी हकीकत पेश करते हैं:

وَوَهَبْنَا لَهٗٓ اِسْحٰقَ ۙ وَيَعْقُوْبَ نَافِلَةً ۙ وَكُلًّا جَعَلْنَا صٰلِحِيْنَ ﴿٧٢﴾
وَجَعَلْنٰهُمْ اَىِٕمَّةً يَّهْدُوْنَ بِاَمْرِنَا وَاَوْحَيْنَآ اِلَيْهِمْ فِعْلَ الْخَيْرٰتِ وَاِقَامَ
الصَّلٰوةِ وَاِيْتَآءَ الزَّكٰوةِ ۚ وَكَانُوْا لَنَا عٰبِدِيْنَ ۙ ﴿٧٣﴾

"और हमने उन्हें (इब्राहिम को) इसहाक़ और याकूब बतौर तोहफ़ा अता किए, और हम ने उन्हें नेक बनाया। और हमने उन्हें ईमान मुकर्रर किया जो हमारे हुक्मो के मुताबिक रहनुमाई करते थे, **और हमने उन्हें नेक काम और नमाज़ और ज़कात की पाबंदी की तालीम दी**।" 21:72-73

बदकिस्मती से, क़ुरान की ये साफ़ सच्चाई उन लोगो की पहुच में नहीं है जो ये साबित करने की कोशिश करते रहते हैं की क़ुरान मुकम्मल नहीं है।

सबसे पहले, उन्हें सच्चे दिल से यक़ीन करना होगा की क़ुरान मुक़म्मल है, बिलकुल सही है और पूरा तफ्सील से है; उन्हें अपने ख़ुदा पर यक़ीन करना होगा। एक बार जब उन्हें इसका यकीन हो जाएगा, तो उनके दिलों से ताले हटा दिए जाएगे, उनके कानों से बहरापन हटा दिया जाएगा, और वो क़ुरान की सच्चाई के लायक हो जाएँगे।

रोज़े हमारे पास इब्राहिम के ज़रिये पहुचे

(फ़िर क़ुरान में तरीका तब्दील कर दिया गया)

أُحِلَّ لَكُمْ لَيْلَةَ الصِّيَامِ الرَّفَثُ اِلٰى نِسَآئِكُمْ هُنَّ لِبَاسٌ لَّكُمْ وَاَنْتُمْ لِبَاسٌ لَّهُنَّ عَلِمَ اللّٰهُ اَنَّكُمْ كُنْتُمْ تَخْتَانُوْنَ اَنْفُسَكُمْ فَتَابَ عَلَيْكُمْ وَعَفَا عَنْكُمْ فَالْـٰٔنَ بَاشِرُوْهُنَّ وَابْتَغُوْا مَا كَتَبَ اللّٰهُ لَكُمْ

"तुम्हें रोज़े की रातों में अपनी बीवियों के साथ हमबिस्तरी करने की इजाज़त है; वो तुम्हारे हमराज़ हैं, और तुम उनके हमराज़ हो। ख़ुदा जानते थे कि **तुम पुराने दिनों में अपनी रूह को धोखा देते थे (रात में हमबिस्तरी करके).** उन्होने तुम्हें बक्शा है, और उन्होने तुम्हें माफ किया है। अब से तुम उनके साथ हमबिस्तरी कर सकते हो, और तलब करो जो ख़ुदा ने तुम्हारे लिए इजाज़त दी है।"

(2:187 का हिस्सा)

इस तरह, यह आयत से हमें साफ-साफ पता चलता है की मुहम्मद से पहले रोज़ा इब्राहीम के महज़ब (इस्लाम) के मुताबिक रखा जाता था।

शुरुआत में जब इब्राहिम के ज़रीए रोज़ा रखने का हुक़्म दिया गया था, तो रमज़ान के पूरे महीने में, दिन में और रात में भी हमबिस्तरी को हराम किया गया था।

हज हमारे तक इब्राहीम के ज़रिये पहुचा

गौर करें कि यही आयत **नमाज़ का तरीका** भी बताती है (रुकु और सजदा)

وَاِذْ بَوَّاْنَا لِاِبْرٰهِيْمَ مَكَانَ الْبَيْتِ اَنْ لَّا تُشْرِكْ بِيْ شَيْـًٔا وَّطَهِّرْ بَيْتِيَ لِلطَّاۤىِٕفِيْنَ وَالْقَاۤىِٕمِيْنَ وَ الرُّكَّعِ السُّجُوْدِ ﴿٢٦﴾

وَاَذِّنْ فِى النَّاسِ بِالْحَجِّ يَاْتُوْكَ رِجَالًا وَّعَلٰى كُلِّ ضَامِرٍ يَّاْتِيْنَ مِنْ كُلِّ فَجٍّ عَمِيْقٍ ۙ ﴿٢٧﴾

"हमने इब्राहिम को इबादतगाह (काबा) की जगह दिखाई, और उसे हिदायत की के मेरे सिवा किसी की इबादत ना करना, और मेरी इबादतगाह को उन लोगों के लिए पाक करे जो इसकी ज़्यारत करने आएंगे, जो इसमे एतेकाफ़ करेंगे, और जो रुकू और सज़दा करेंगे और तुम (ऐ इब्राहिम) एलान करो कि लोग हज अदा करें फिर वो दूर-दूर जगहों से चल कर या सवारी कर के तुम्हारे पास आएँगे।"

22:26-27

इस तरह, क़ुरान साफ़ तौर पर सिखाता है की **इस्लाम के सभी मज़हबी तरीके** (नमाज़, ज़कात, रोज़ा और हज) इब्राहिम के ज़रिये हमारे पास आए।

क़ुरान सिखाता है की ख़ुदा ने इब्राहीम को सिखाएँ की नमाज़, ज़कात, रोज़ा और हज कैसे करना है, फिर इब्राहीम ने ये तरीखे अपने बच्चों को सिखाएँ, और इसी तरह पीढ़ी दर पीढ़ी ये चलता रहा।

वो फिर भी ज़िद्द पर अड़े रहते है

यहाँ तक की इन लोगो को क़ुरान के सारे सबूत दिखने के बावजूद भी , वो लोग जो ख़ुदा पर यकीन नहीं करते, आप देखेंगे की वो अपने तौर-तरीको पर चलने की ही ज़िद्द पर अड़े रहेंगे। हैरान न होना अगर इस के बावजूद भी वो आप से ये पूछें "क़ुरान में नमाज़ का तरीका कहा है?"

जब तक वो अपने ख़ालिक़ पर यकीन करने का फैसला नहीं लेते कि क़ुरान मुक़म्मल हैं, वो क़ुरान की सच्चाई को कभी नहीं देख सकते। ये नीचे दर्ज किया गया है:

क़ुरान को मानने से इन्कार करने के नतीजे

क़ुरान को देखने, सुनने या समझने से महरूम होना। इस तरह, हिदायत पाना नामुमकिन हो जाता है।

وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنْ ذُكِّرَ بِاٰيٰتِ رَبِّهٖ فَاَعْرَضَ عَنْهَا
وَنَسِيَ مَا قَدَّمَتْ يَدٰهُ اِنَّا جَعَلْنَا عَلٰى قُلُوْبِهِمْ اَكِنَّةً اَنْ يَّفْقَهُوْهُ وَفِيْٓ
اٰذَانِهِمْ وَقْرًا وَاِنْ تَدْعُهُمْ اِلَى الْهُدٰى فَلَنْ يَّهْتَدُوْٓا اِذًا اَبَدًا ﴿٥٧﴾

"उससे ज़्यादा बुरा कौन है जिसे उसके रब की आयतें याद दिलाई जाए, फिर उसे नज़र अंदाज़ करता है, अपने गुनाह से बेखबर हो कर? नतीज़तन, हम उनके दिलों पर ताले लगाते है, ताकि उन्हें समझने(क़ुरान) से रोकें और उनके कानों में बहरापन। इस तरह, अगर तुम उन्हें हिदायत की तरफ बुलाते हो, तब भी वो कभी हिदायत नहीं पा सकते।"

18:57

ज़िंदगी की दो बदकिस्मत तरीन हक़ीक़तें

(1) ज़्यादातर लोग काफिर है।

(2) ज़्यादातर ईमान वाले जहन्नुम में जाएंगे।

وَمَآ اَكْثَرُ النَّاسِ وَلَوْ حَرَصْتَ بِمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٠٣﴾

"ज़्यादातर लोग, चाहे आप कुछ भी करें, ईमान वाले नहीं हैं।" 12:103

وَمَا يُؤْمِنُ اَكْثَرُهُمْ بِاللّٰهِ اِلَّا وَهُمْ مُّشْرِكُوْنَ ﴿١٠٦﴾

"और जो लोग ख़ुदा पर ईमान रखते हैं उनमे से ज़्यादातर लोग बुतपरस्त हैं।" 12:106

इस तरह, **अगर आप बड़ी तादाद में हैं, तो आप गहरी मुसीबत में हैं।**

यहाँ तक की आगर आप ईमान वालों की तादाद में हैं, तब भी आप गहरी मुसीबत में है।

जो लोग सिर्फ़ **एक ख़ुदा** की इबादत करते हैं वो बहुत गिने-चुने और बहुत ही खुशकिस्मत गिरोह होते हैं; उनकी तादाद कम में भी कम है।

मसला ये हैं: वो समझते हैं कि वो नेक है

وَمَنْ يَّعْشُ عَنْ ذِكْرِ الرَّحْمٰنِ نُقَيِّضْ لَهٗ شَيْطٰنًا فَهُوَ لَهٗ قَرِيْنٌ ﴿٣٦﴾

وَاِنَّهُمْ لَيَصُدُّوْنَهُمْ عَنِ السَّبِيْلِ وَيَحْسَبُوْنَ اَنَّهُمْ مُّهْتَدُوْنَ ﴿٣٧﴾

"जो कोई भी ख़ुदा-अर-रहमान के पैगाम को नज़र अंदाज़ करता है, हम एक शैतान को उसका मुसलसल साथी मुकर्रर करते हैं। फिर शैतान उन्हें रास्ते से भटकाता है, फिर उन्हे ये **<u>एहसास</u>** दिलाता है कि वो सही रास्ते पर हैं।" 43:36-37

وَاَقِيْمُوْا وُجُوْهَكُمْ عِنْدَ كُلِّ مَسْجِدٍ وَّادْعُوْهُ مُخْلِصِيْنَ لَـهُ الدِّيْنَ كَمَا بَدَاَكُمْ تَعُوْدُوْنَ ﴿٢٩﴾

فَرِيْقًا هَدٰى وَ فَرِيْقًا حَقَّ عَلَيْهِمُ الضَّلٰلَةُ اِنَّهُمُ اتَّخَذُوا الشَّيٰطِيْنَ اَوْلِيَآءَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَيَحْسَبُوْنَ اَنَّهُمْ مُّهْتَدُوْنَ ﴿٣٠﴾

"तुम हर मस्जिद में पूरी तरह नेक बने रहो, और ख़ुदा की इबादत करो, अपनी इबादत पूरी तरह से सिर्फ़ उन्हीं के लिए मखसूस करो। जिस तरह उन्होने तुम्हें शुरू से बनाया था, तुम आखिरकार उन्ही की तरफ लौटाएं जाओगे। कुछ को वो हिदायत देते हैं। बाकी लोग गुमराही के मुर्तकिब होते है, क्योंकि वो ख़ुदा के बजाय शैतानो को अपना साथी बना लिए, और **<u>सोचते</u>** हैं कि वो सही राह पर हैं।"

7:29-30

قُلْ هَلْ نُـنَبِّئُكُمْ بِالْاَخْسَرِيْنَ اَعْمَالًا ﴿١٠٣﴾ اَ لَّذِيْنَ ضَلَّ سَعْيُهُمْ فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَ هُمْ يَحْسَبُوْنَ اَنَّهُمْ يُحْسِنُوْنَ صُنْعًا ﴿١٠٤﴾

"सबसे बुरी तरह हारने वाले वो हैं जो भटक जाते हैं, और **सोचते** है कि वो सही रास्ते पर हैं।"

18:103-104

वो अपने बुत-परस्ती से बेखबर

ज़्यादा तादाद में "ईमान वाले" अंजाने में शिर्क करते हैं; उन्हे एहसास नहीं होता कि वो शिर्क कर रहे हैं:

وَيَوْمَ نَحْشُرُهُمْ جَمِيْعًا ثُمَّ نَقُوْلُ لِلَّذِيْنَ اَشْرَكُوْٓا اَيْنَ شُرَكَآؤُكُمُ الَّذِيْنَ كُنْتُمْ تَزْعُمُوْنَ ﴿٢٢﴾ ثُمَّ لَمْ تَكُنْ فِتْنَتُهُمْ اِلَّآ اَنْ قَالُوْا وَاللّٰهِ رَبِّنَا مَا كُنَّا مُشْرِكِيْنَ ﴿٢٣﴾ اُنْظُرْ كَيْفَ كَذَبُوْا عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ﴿٢٤﴾

"जिस दिन (फैसले के दिन) जब हम सब लोगों को इकठ्ठा करेंगे, तब हम बुत-परस्ती करने वालो से पूछेगे, 'तुम्हारे बुत कहा है, ख़ुदा के बजाए जिनकी तुम इबादत करते थे?' तब, उनका एक ही जवाब होगा, 'कसम ख़ुदा की जो हमारे रब है, हम बुत-परस्त नहीं थे।' गौर करें की किस तरह उन्होंने खुद से भी झूठ बोला और गौर करें जो बुत उन्होंने कायम किए थे वो उन्हें छोड़ देंगे।" 6:22-24

इस तरह, ऐसे लोग हैं जो बुत-परस्त हैं, जो अपनी बुत-परस्ती से बेखबर हैं। क्या आप उनमें से एक हो? आप कैसे जानते हो की आप उनमें से एक नहीं हो? ये मालूम करने के लिए आपके पास सिर्फ यही एक मौका है की आप बुत-परस्त नहीं हो।

आप कैसे मालूम कर सकते हो के आप एक बूतपरस्त नहीं हो?

जवाब पेज 87 पर हैं

"हदीस और सुन्नत" की एहमीयत

क़ुरान सिखाता है कि "हदीस और सुन्नत" सच्चे मुसलमान को झूठे मुसलमान से अलग करने के लिए एक जरूरी इम्तिहान है।

सच्चा मुसलमान ख़ुदा के उन बयानों पर यकीन रखता है, की क़ुरान मुकम्मल है, सही और पूरी तरह से तफसीली है (6:19, 38, और 114) इसलिए, सच्चा मुसलमान मज़हबी हिदायत के लिए किसी दूसरे ज़रिए को क़ुबूल नहीं करेगा।

और वो जो झूठा मुसलमान है, मर्द हो या औरत "हदीस और सुन्नत" की तरफ खिंचा चला जाएगा, और इस तरह एक मुनाफिक के तौर पर बे-नक़ाब हो जाएगा जो ज़ाहिरी तौर पर कहता रहता है के ईमान रखता है, जबकि दिल अंदर से इनकार कर रहा होता हैं (देखिए 16:22).

وَكَذٰلِكَ جَعَلْنَا لِكُلِّ نَبِيٍّ عَدُوًّا شَيٰطِيْنَ الْاِنْسِ وَالْجِنِّ يُوْحِيْ بَعْضُهُمْ اِلٰى بَعْضٍ زُخْرُفَ الْقَوْلِ غُرُوْرًا وَلَوْ شَآءَ رَبُّكَ مَا فَعَلُوْهُ فَذَرْهُمْ وَمَا يَفْتَرُوْنَ ﴿١١٢﴾ وَلِتَصْغٰٓى اِلَيْهِ اَفْـِٕدَةُ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ وَلِيَرْضَوْهُ وَلِيَقْتَرِفُوْا مَا هُمْ مُّقْتَرِفُوْنَ ﴿١١٣﴾

"हम हर नबी के खिलाफ दुश्मन खड़ा करते हैं, इंसान और जिन्न शैतानो में से, जो धोका देने के लिए एक दूसरे को सजावटी लफ्ज़ो को इजाद करने पर ज़ोर देते हैं। अगर आप के रब चाहते तो वो ऐसा नहीं करते (लेकिन ये ख़ुदा की मर्ज़ी है) ताकि जो लोग आख़िरत पे यकीन नहीं रखते उनके ज़ेहन इसे सुनें, और उन्हें इसे कुबूल करें, और उन की असली पहचान को बे-नक़ाब करें।" 6:112-113

क्या आप क़ुरान से मुतमइन हैं? क्या आप ख़ुदा को मानते हैं? या, क्या आपको लगता है की क़ुरान मुकम्मल नहीं है; कि आप को मज़हबी हिदायतो के लिए इस के अलावा और भी ज़रियो की ज़रूरत है?

एक सही "हदीस"

क़यामत के दिन, मुहम्मद सब से पहले शिकायत करेंगे कि उनके मानने वालो ने क़ुरान को छोड़ दिया था, उनके दुश्मनो की मन-घड़त बातो (<u>हदीस और सुन्नत</u>) के खातिर :

وَقَالَ الرَّسُوْلُ يٰرَبِّ اِنَّ قَوْمِى اتَّخَذُوْا هٰذَا الْقُرْاٰنَ مَهْجُوْرًا ﴿٣٠﴾
وَكَذٰلِكَ جَعَلْنَا لِكُلِّ نَبِيٍّ عَدُوًّا مِّنَ الْمُجْرِمِيْنَ وَكَفٰى بِرَبِّكَ
هَادِيًا وَّنَصِيْرًا ﴿٣١﴾

"और रसूल कहेंगे, 'ऐ मेरे रब, मेरे लोगो ने **इस क़ुरान** को छोड़ दिया।' इस तरह हम हर एक नबी के खिलाफ़ दुश्मन खड़ा करते हैं जो गुनाहगार हैं। **आपका रब हिदायत और मदद के लिए काफी है** (यानी कि क़ुरान काफी है)." 25:30-31

गौर करें ऊपर दी गई आयत 25:31 और पिछले पेज की आयत 6:112 के मिलते- जुलते अल्फ़ाज़ पर। क्या ये इत्तेफाक हो सकता है?

इस तरह, नबी मुहम्मद उन लोगों से मायुस हो जाएंगे जो उनसे हद से ज़्यादा मोहब्बत करते हैं, जिस तरह ईसा उन ईसाइयो से मायुस हो जाएंगे जो उन्हें ख़ुदा या ख़ुदा का बेटा मानते होंगे।

क़ुरान: एकलौती जायज़ "हदीस"

تِلْكَ اٰيٰتُ اللّٰهِ نَتْلُوْهَا عَلَيْكَ بِالْحَقِّ فَبِاَيِّ حَدِيْثٍ بَعْدَ اللّٰهِ وَاٰيٰتِهٖ يُؤْمِنُوْنَ ۝٦ وَيْلٌ لِّكُلِّ اَفَّاكٍ اَثِيْمٍ ۝٧

يَّسْمَعُ اٰيٰتِ اللّٰهِ تُتْلٰى عَلَيْهِ ثُمَّ يُصِرُّ مُسْتَكْبِرًا كَاَنْ لَّمْ يَسْمَعْهَا فَبَشِّرْهُ بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ۝٨

وَاِذَا عَلِمَ مِنْ اٰيٰتِنَا شَيْـًٔا اتَّخَذَهَا هُزُوًا اُولٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ۝٩

مِنْ وَّرَآئِهِمْ جَهَنَّمُ وَلَا يُغْنِىْ عَنْهُمْ مَّا كَسَبُوْا شَيْـًٔا وَّلَا مَا اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اَوْلِيَآءَ وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ۝١٠

هٰذَا هُدًى وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِ رَبِّهِمْ لَهُمْ عَذَابٌ مِّنْ رِّجْزٍ اَلِيْمٌ ۝١١

ये ख़ुदा की आयतें हैं; हम इन्हें आपके लिए सच्चाई से पढ़ते हैं। वो किस "हदीस" को मानते हैं ख़ुदा और उनकी आयतों के अलावा? **अफ़सोस हैं हर झूठे गुनाहगारो पर**। वो ख़ुदा की आयतों को सुनता है, फिर तकब्बुर से ख़ुद के रास्ते पर चलने पर अड़ा रहता है, जैसे की उसने उन्हें कभी सुना ही नहीं; उसे एक दर्दनाक अज़ाब का वादा करो। जब वो हमारी आयतों से कुछ सीखता है, वो उसे बेकार में लेता है; ये ज़िल्लत-भरे अज़ाब के हक़दार है। जहन्नुम उनका इंतज़ार कर रही हैं; ना उनकी कमाई और ना उनके बुत जो उन्होंने ख़ुदा के इलावा कायम किए थे, उनकी मदद कर सकते है; वो ख़ौफ़नाक अज़ाब के हक़दार है। **यही हिदायत है,** और वो लोग जो अपने रब की आयतों पर ईमान नहीं रखते, वो ज़िल्लत और दर्दनाक अज़ाब भुगतेंगे। 45:6-11

क्या आप ख़ुदा की आयतों पर यकीन करते हैं? क्या आप मानते हैं की क़ुरान मुकम्मल है, बिलकुल दुरुस्त और पूरी तरह तफ़सीली है (6:19, 38, और 114)? या, क्या आपके पास क़ुरान के अलावा कुछ और भी ज़रिए होने चाहिए?

क़ुरान ही सिर्फ एकलौती "हदीस" हैं जिसे मानना चाहिए; बाकी सारी हदीसे गुस्ताख़ाना और भटकाने वाली मन-घड़त बातें हैं।

اَللّٰهُ نَزَّلَ اَحْسَنَ الْحَدِيْثِ كِتٰبًا مُّتَشَابِهًا مَّثَانِىَ تَقْشَعِرُّ مِنْهُ جُلُوْدُ الَّذِيْنَ
يَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ ثُمَّ تَلِيْنُ جُلُوْدُهُمْ وَقُلُوْبُهُمْ اِلٰى ذِكْرِ اللّٰهِ ذٰلِكَ هُدَى
اللّٰهِ يَهْدِىْ بِهٖ مَنْ يَّشَآءُ وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنْ هَادٍ ﴿٢٣﴾

"ख़ुदा ने सबसे बेहतरीन 'हदीस' को नाज़िल किए है; एक ऐसी किताब जो बिला-मुतज़ाद है, और दोनों (जन्नत और जहन्नम के) रास्तो को बयान करती है। जो लोग अपने रब का इहतिराम करते है, इससे उनके रोंगटे खड़े हो जाते हैं, फिर उनकी खालें और उनका दिल ख़ुदा के ज़िक्र में नर्म पड़ जाते है। ऐसी है ख़ुदा की हिदायत; वो जिसे चाहते है उसे हिदायत अता करते है। जो भटके हुए है ख़ुदा की तरफ से, उनको कोई हिदायत अता नहीं कर सकता।" 39:23

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّشْتَرِىْ لَهْوَ الْحَدِيْثِ لِيُضِلَّ عَنْ سَبِيْلِ
اللّٰهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ وَّيَتَّخِذَهَا هُزُوًا اُولٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ﴿٦﴾
وَاِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِ اٰيٰتُنَا وَلّٰى مُسْتَكْبِرًا كَاَنْ لَّمْ يَسْمَعْهَا كَاَنَّ فِىْٓ
اُذُنَيْهِ وَقْرًا فَبَشِّرْهُ بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ﴿٧﴾

"ऐसे लोग हैं जो बेबुनियाद हदीस की वकालत करते हैं, बिना इल्म के, ख़ुदा के रास्ते से भटकने की वजह बनते हैं, और इस तरह के कामो को संजीदगी से लेने में नाकाम रहते हैं; ये ज़िल्लत भरी सज़ा के हक़दार हैं। और जब हमारी आयतें उसको पढ़ कर सुनाई जाती हैं, तब वो तकब्बुर से मुँह फेर लेता है, जैसे के उसने उन्हें कभी सुना ही नहीं; जैसे के उसके कान बहरे हैं; उसे दर्दनाक अज़ाब का वादा करो।" 31:6-7

ठोस सबूत (फिज़िकल एविडेंस)

इसके अलावा क़ुरान के साफ बयानात जिसमे ईमान वालो को यकीन दिलाया गया है की क़ुरान मुक़म्मल है, दुरुस्त है; पूरी तरह से तफ्सीली हैं, और ये मज़हबी हिदायत का **वाहिद** ज़रिया होना चाहिए, इसके अलावा नाक़ाबिल-ए-इनकार **फिज़िकल एवीडेंस** को इन आयतों के साथ जोड़ना ख़ुदा ता-अला की मर्ज़ी थी।

क़ुरान में एक मॅथामॅटिकल मिरेकल (रियाज़ी मौजज़ा) की खोज की गई, जिसके तहेत क़ुरान में हर लफ्ज़, बल्की हर हर्फ़ को बहुत ही पेचीदा अदादि ज़ाब्ते (न्यूमॅरिकल कोड) के मुताबिक रखा गया था। ये कोड, नंबर (19) की बुनियाद पर है, जो की क़ुरान की शुरुआती बयान के अल्फाजों की तादाद है और 74:30 में इशारा किया गया नंबर उन लोगों को जवाब देता है जो दावा करते है की क़ुरान इंसान का बनाया हुआ है। ये मॅथामॅटिकल मिरेकल बिला शुबा साबित करता है के क़ुरान एक आसमानी किताब है और बिलकुल महफूज़ है। तफ़सील के लिए देखें किताब, "**क़ुरान: विज़ुअल प्रेजेंटेशन ऑफ़ दी मिरेकल**।"

फिज़िकल एविडेंस जो इस बात की हिमायत करता है के **मज़हबी हिदायत के लिए सिर्फ** क़ुरान ही वाहिद ज़रिया है वो क़ुरान के इस मॅथामॅटिकल मिरेकल से जुड़ा हुआ है; ये भी नंबर (19) की बुनियाद पर है, इस तरह का सबूत पेज 64-72 पर दिया है।

क्यों की ये सबूत बिलकुल फिज़िकल है, इसीलिए बजाए इसके के लोग इसकी तशरीह करें, सभी आज़ाद खयाल वाले लोग इसे क़ुबूल करेंगे। सिर्फ वही लोग जो झूठे अक़ीदों में फंसे हुए हैं, इस खुले सच को देखने में नाकाम होंगे, क्यों की ये अज़ाब क़ुरान को ठुकराने के वजह से है (देखिए 17:45).

अगले चार सीफे जो क़ुरान के मौजज़े को मुख़्तसर में बयान करते हैं वो फिर से छापे गए है किताब "**क़ुरान: विज़ुअल प्रेजेंटेशन ऑफ़ दी मिरेकल** (मौजज़े की बसरी पेशकश)" से।

क़ुरान : विज़ुअल प्रेजेंटेशन ऑफ़ दी मिरेकल

रशाद खलीफा, Ph.D
ईमान, मस्जिद ट्यूसॉन, एरिज़ोना

मुख़्तसर बयान और नतीजे

इस किताब में क़ुरान के मौजज़े की तफ्सील इन्तेहाई सादगी से लेकर इन्तेहाई पेचीदगियों तक है। क्योंकि क़ुरान सभी लोगों के लिए नीचे भेजा गया था, इसकी ज़ूबान बहुत ही आसान से लेकर आला दर्ज़े की है। इस से पैगाम को समझना आसान हो जाता है, भले ही किसी की तालीम कम या ज़्यादा हो। क़ुरान के मौजज़े के साथ भी ऐसा ही है। इस तरह,

इस गैर मामुली हालात को बनाने वाले फिज़िकल हक़ायक़ को **सादा हक़ायक़** और **पेचीदा हक़ायक़** में तक़सीम किया जा सकता है।

आसानी से समझ आने वाले मौजज़े

(1) क़ुरान के शुरुआती बयान में 19 हुरूफ हैं।

(2) क़ुरान में 114 सूरतें हैं, यानि 6 x 19.

(3) क़ुरान की पहली आयत (96:1-5) में 19 अल्फाज़ थे।

(4) पहली आयत में 76 हुरूफ, या 19 x 4 शामिल थे।

(5) पहली सूरा (सूरत 96) नाज़िल हुई जिसमे 19 आयतें शामिल थी।

(6) क़ुरान के आखिर से, सूरत 96 की जगह 19 वी है।

(7) नाज़िल की गई पहली सूरत में 304 हुरूफ हैं; 19 x 16.

(8) नाज़िल की गई आखिरी सूरत (सूरत 110) में 19 अल्फाज़ हैं।

(9) आखिरी वही की पहली आयत में 19 हुरूफ हैं।

(10) दुसरी वही (68:1-9) में 38 अल्फाज़ थे; 19 x 2.

(11) तीसरी वही (73:1-10) में 57 अल्फाज़ थे; 19 x 3.

(12) चौथी वही (74:1-30) ने खुद नंबर 19 को ले आई।

(13) पाँचवीं वही (सूरत 1) जिस में 19 हुरूफ शामिल थे उसने शुरुआती बयानों को 74:30 के नंबर 19 के बाद फ़ौरन पेश किया।

(14) शूरूआती बयान में पहला लफ्ज़ क़ुरान में ठीक 19 बार आता है।

(15) शूरूआती बयान में दुसरा लफ्ज़ (अल्लाह) क़ुरान में 2,698 बार आता है, 19 का मल्टीपल (जर्ब) है (19 x 142).

(16) शूरूआती बयान में तीसरा लफ्ज़ (रेहमान) क़ुरान में 57 बार आया है (19 x 3).

(17) शूरूआती बयान में चौथा लफ्ज (रहीम) क़ुरान में 114 बार आया है (19 x 6).

(18) शूरूआती बयान के ज़र्ब के अवामिल (अजज़ा और कारकुन और अनासिर) (ऊपर दिए गए पॉइंट 14-17 देखें) [1+142+3+6] जमा हो कर 152 बनते हैं जो 19 का हासिल ज़रब भी है (19×8).

(19) शुरुआती बयान के अल्फाज़ क़ुरान में ऐसे दोहराए गए हैं के वो अल्फाज़,19, 2698, 57, और 114 बार आते हैं और वो अल्लाह के कई नामो में से एक नाम से इत्तेफाक रखते हैं।

(20) ख़ुदा के जाने हुए नामों की सभी जमा की गई फेहरिस्तों में (400 से ज़्यादा) **सिर्फ चार** नाम शामिल थे जिनके अदादि (न्यूमेरिकल) वैल्यू 19 से तकसीम होती थी। ये चार नाम वही चार हैं जो ऊपर पोइन्ट 19 में बताए गए फ्रीक्वेंसीस के बराबर हैं।

(21) शुरुआती बयान सूरत 9 से गयब है, लेकिन बदले में सूरत 27 की आयत 30 में दिया गया है। ये इस अहम बयान की फ्रीक्वेंसी को 114 (19 x 6) पर फिर से ले आता है।

(22) गुमशुदा बयान (सूरत 9) और इज़ाफ़ी बयान (सूरत 27) के बीच 19 सूरत है।

पेचिदा सच्चाई

(23) सूरत 50 का उनवान "काफ़”है, जिसकी शुरूआत हर्फ़ “काफ़" से है और इसमें 57 क (57=19x3) शामिल हैं.

(24) "काफ़" हर्फ़ से शुरू की गई सिर्फ एक ही और सूरत है जो की सूरा 42, उसमे भी 57 क (19x3) शामिल हैं।

(25) हर्फ़ "काफ़" "क़ुरान" को ज़ाहिर करता है और कुल तादाद “काफ़" की इन दोनो सूरतों में मिला कर (57+57 = 114) बनती हैं।

(26) सूरत 50 (उनवान "काफ़") की पहली आयत में क़ुरान को (मजीद = शानदार) के तौर पर बयान करती है और मजीद लफ्ज़ की अददी वैल्यू (न्यूमेरिकल वैल्यू) 57 है, बिलकुल इसी तरह इस सूरत में काफ़ की तदाद उतनी ही मरतबा है।

(27) सूरत 68 हर्फ़ "नून" के साथ शुरू होता है और उसमे 133 नून हैं, यानी 19x7.

(28) सूरत 7, 19, और 38 के हर्फ़ "सा” (साद) इनिशियल के साथ शुरू होते है, और इस हर्फ़ की मौजूदगी की सब मिला कर तादाद तीनो सुरतो में 152 है, यानी 19x8.

(29) सूरत 36 हर्फ़ "य" और "स" के इनीशियल्स के साथ शुरू हुई है और इस सूरत में दोनों हुरूफ़ की सब मिला कर तादाद 285 है, यानी 19 x15.

(30) सूरत 40 से 46 "हा" और "म" के साथ शुरू किए जाते हैं। इन 7 सूरतों में 2 हुरूफ़ की सब मिला कर तादाद 2147 है, यानी 19×113.

(31) सूरत 42 इन 3 शुरुआती हुरूफ "'ऐ ," "स," और "काफ़," के साथ पहले से जोड़ दिया गया है और इस सूरत में इन 3 हुरूफ की सब मिला कर तादाद 209 है, या 19×11 है।

(32) सूरत 19 शुरू हुआ है 5 हुरूफ़ के साथ जो है "क," "ह," "य," "ऐ, " और "सा," और इस सूरत में इन ५ हुरूफ़ की मौजूदगी की सब मिला कर तादाद 798 है , यानि 19 x 42.

(33) क़ुरान के शुरुआती हुरूफ़ "ह," "त .ह .," "त .स .'' और "त .स . म." इन पांच सूरतों यानि, 19, 20, 26, 27 और 28 के अंदर आपस में जुड़ कर एक अनोखा रिश्ता बनाते हैं। इन सभी हुरूफ की सब मिला कर तादाद 1767 है, यानी 19 x 93 है।

(34) सूरत 2 हुरूफ "अ .ल .म ." से शुरू किया गया है और इसमे 9899 हुरूफ शामिल है (19 x 521).

(35) सूरत 3 भी हुरूफ "अ .ल .म." से शुरू किया गया है और इसमे 5662 हुरूफ़ शामिल है (19 x 298).

(36) सुरते 29, 30, 31, और 32 भी हुरूफ "अ .ल .म" से शुरू की गई है और इसमे इन हुरूफ की मौजूदगी की तादाद सब मिला कर 1672 (19 x 88), 1254 (19 x 66), 817 (19 x 43), और 570 (19 x 30), तरकीब के साथ हैं.

(37) सूरते 10 और 11 हुरूफ "अ .ल. र.," से शुरू किए गए है और हुरूफ की मौजूदगी की तादाद बिलकुल वोही हैं, वो हैं 2489 (19 x 131).

(38) सूरते 12, 14 और 15 भी हुरूफ "अ .ल. र.," से शुरू किए गए है। इन सूरतों में इन हुरूफ की मौजूदगी की तादाद सब मिला कर 2375 (19 x 125), 1197 (19 x 63), और 912 (19 x 48) तरकीब के साथ हैं।

(39) सूरत 13 में शुरुआती हुरूफ "अ .ल. म. र.," को पहले से ही ले लिया गया है और सब मिल कर हुरूफ 1482 (19 x 78) हैं।

(40) सूरत 7, चार हुरुफ "अ .ल. म. सा." के साथ शुरू होता है और इस सूरत में इन चार हुरुफ की मौजूदगी की तादाद सब मिला कर 5320, यानी 19 x 280 है।

(41) क़ुरान के शुरूआती हुरूफ़ की तदाद 14 है, और इन शुरूआती हुरूफ़ को बनाने में हिस्सा लेने वाले इनीशियल्स भी 14 हैं, और जिन सुरतो में ये शुरूआती हुरूफ़ आते हैं उनकी गिनती भी 29 है। जब हम इन नंबरों को जोड़ते हैं,14+14+29, तो हम कुल 57 मिलते हैं, यानि 19 3.

(42) क़ुरान के शुरूआती हुरूफ़ को "क़ुरान का मौजज़ा" बताया गया है (देखिए पेज 240 [किताब “क़ुरान : विज़ूअल प्रेज़न्टेशन ऑफ़ द मिरेकल” में]).

(43) पूरे क़ुरान में [19] वो नंबर है जिससे हर नंबर तकसीम किया जाता है, और ये अरबी लफ्ज़ **"एक** =वाहिद" की भी न्यूमॅरिकल वैल्यू हैं। इस तरह, ये मौजज़ा क़ुरान और इसके बुनियादी पैगाम "**ख़ुदा एक है**" पर ज़ोर देता है।

नतीजा:

यहाँ पेश किए गए फिज़िकल एविडेन्स ये साबित करते हैं:

(1) क़ुरान का सिर्फ ख़ुदा की तरफ से आना।

(2) क़ुरान की मुकम्मल सच्चाई और हिफाज़त।

क़ुरान: वाहिद ज़रिया हिदायत का (6:19)

हिदायत के लिए दूसरे ज़रियो को क़बूल करना ख़ुदा के सिवा दूसरे खुदाओं को क़ायम करना है; बुत-परस्ती।

ये अहम बयान इत्तेफ़ाक़ से नंबर ⟨19⟩ बनता हैं :

قُلْ اَیُّ شَیْءٍ اَکْبَرُ شَهَادَةً قُلِ اللّٰهُ ۙ شَهِیْدٌۢ بَیْنِیْ وَبَیْنَکُمْ وَاُوْحِیَ اِلَیَّ
هٰذَا الْقُرْاٰنُ لِاُنْذِرَکُمْ بِهٖ وَمَنْۢ بَلَغَ ؕ اَئِنَّکُمْ لَتَشْهَدُوْنَ اَنَّ مَعَ اللّٰهِ
اٰلِهَةً اُخْرٰی ؕ قُلْ لَّاۤ اَشْهَدُ ۚ قُلْ اِنَّمَا هُوَ اِلٰـهٌ وَّاحِدٌ وَّاِنَّنِیْ بَرِیْٓءٌ مِّمَّا
تُشْرِکُوْنَ ﴿۱۹﴾

"कहो (ऐ मुहम्मद), 'किसकी गवाही बड़ी है?' कहो, ख़ुदा मेरा गवाह है कि **<u>ये क़ुरान</u>** मुझे दिया गया के मैं तुम्हें इसकी तब्लीग करू, और जिस तक ये पहुचे। फिर भी, तुम गवाही देते हो की ख़ुदा के अलावा दूसरे ख़ुदा हैं (क़ुरान के अलावा दूसरे ज़रियो को कायम रखते हुए) कहो, 'मैं ऐसी गवाही नहीं देता कहो, 'सिर्फ एक ख़ुदा है, और मैं तुम्हारी इस बुत-परस्ती को ठुकराता हूँ।" 6:19

ये बहुत अहम आयत इत्तेफाक से नंबर ⟨19⟩ है।

हमने इस किताब (क़ुरान) में से कुछ भी नहीं छोड़ा (6:38)

★ इस आयत की अरबी लिखाई में ठीक ⟨19⟩ हुरूफ़ है।

★ इस आयत का नंबर भी (38) है; यानि ⟨19⟩ x 2.

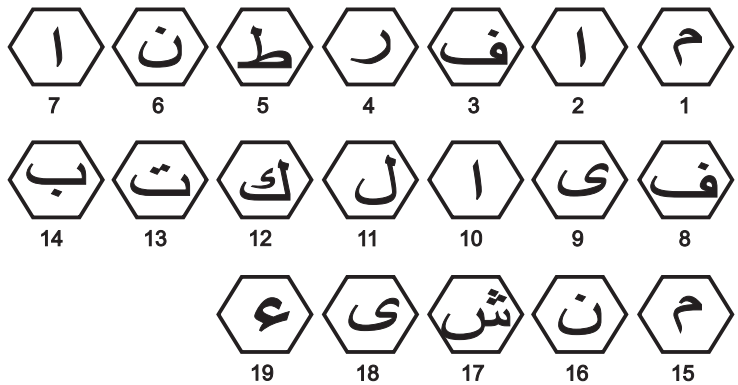

6:38 مَا فَرَّطْنَا فِى الْكِتٰبِ مِنْ شَىْءٍ ثُمَّ اِلٰى رَبِّهِمْ يُحْشَرُوْنَ ﴿٣٨﴾

ख़ुदा ने इस किताब को <u>मुकम्मल तफसील</u> के साथ नाज़िल किया (6:114).

- ★ इस आयत की अरबी लिखाई में ठीक 19 हुरूफ़ है।
- ★ इस आयत का नंबर है 114; यानि 19 x 6.

ا	ن	ط	ر	ف	ا	م
7	6	5	4	3	2	1
ب	ت	ك	ل	ا	ى	ف
14	13	12	11	10	9	8
		ء	ى	ش	ن	م
		19	18	17	16	15

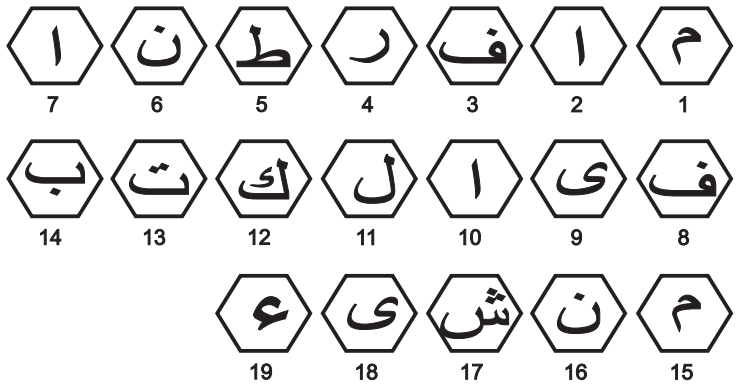

6:114 اَنْزَلَ اِلَيْكُمُ الْكِتٰبَ مُفَصَّلاً

तुम्हारे रब का कलाम (ये क़ुरान) हक और इन्साफ के साथ <u>मुकम्मल</u> है (6:115)

अरबी लिखाई में ये बयान में 19 हुरूफ़ आते है।

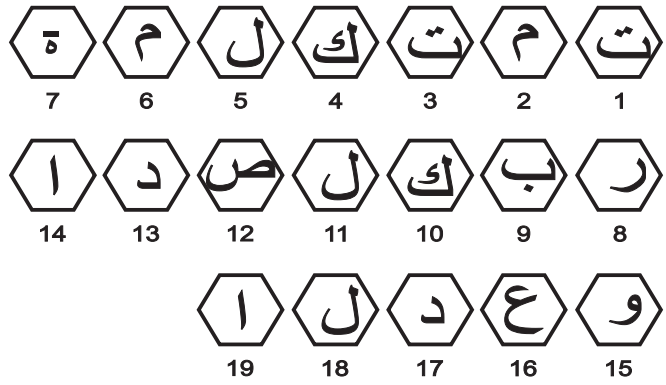

تَمَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ صِدْقًا وَّعَدْلاً 6:115

मुहम्मद को क़ुरान की पेशनगोई करने से मना किया गया

पैगम्बर मुहम्मद को ख़ुदा की तरफ से हुकुम मिला था जिसमें उन्हें बगैर इजाज़त के कुरानी मवाद को बयान करने से मना किया गया था, और क़ुरान के नाज़िल होने के बाद उसपर सख्ती से अमल करने और उसकी पैरवी करने का हुक्म दिया गया।

ये आयत नंबर 114 है, सूरत 20 की।

114 = ⟨19⟩ x 6

وَلَا تَعْجَلْ بِالْقُرْاٰنِ مِنْ قَبْلِ اَنْ يُّقْضٰٓى
اِلَيْكَ وَحْيُهٗ وَقُلْ رَّبِّ زِدْنِىْ عِلْمًا ﴿١١٤﴾

114

क्या ये इत्तेफाक है के इस आयत का नंबर क़ुरान की सूरतों के टोटल नंबर के बराबर हैं?

ख़ुदा और उनके रसूल चाहते हैं के हम सिर्फ क़ुरान, पूरे क़ुरान को ही बरक़रार रखें, और क़ुरान के अलावा कुछ नहीं।

मुहम्मद को क़ुरान को समझाने से मना किया गया था

ऐसे लोग हैं जो दावा करते हैं कि क़ुरान को समझना बहुत मुश्किल है, और क़ुरान को समझने के लिए "हदीस और सुन्नत" की ज़रूरत है। सबसे पहली बात, एक पढ़नेवाला, क़ुरान और "हदीस" को एक नज़र देखेगा तो वो समझ जाएगा के सच्चाई इसकी उलट है। क्योंकि "हदीस" को लिखने वाले मुख्तलिफ कबीले, यहाँ तक के मुख्तलिफ मुल्क से ताल्लुक रखते थे, जिनकी मुख्तलिफ ज़बाने, बाज़ारी बोली और लहज़े की वजह से "हदीस" की ज़बान, हकीकत में बहुत ही ज़्यादा मुश्किल है।

لَا تُحَرِّكْ بِهٖ لِسَانَكَ لِتَعْجَلَ بِهٖ ﴿١٦﴾ اِنَّ عَلَيْنَا جَمْعَهٗ وَقُرْاٰنَهٗ ﴿١٧﴾
فَاِذَا قَرَاْنٰهُ فَاتَّبِعْ قُرْاٰنَهٗ ﴿١٨﴾ ثُمَّ اِنَّ عَلَيْنَا بَيَانَهٗ ﴿١٩﴾ ➡

"(ऐ महुम्मद) जल्दबाज़ी ना करें क़ुरान पहुँचाने में। यह हम हैं जो इसे क़ुरान के तौर पर इकट्ठा करेंगे। एक बार जब हम इसे नाज़िल करें, तो **तुम इस पर अमल करो**। फिर, यह हम ही हैं जो इसे समझाएँगे।" 75:16-19

ये आयत ये बताती है की बस ख़ुदा है जो क़ुरान समझाते है इत्तेफाक से आयत का नंबर 19 हैं।

क़ुरान मे वो सारी मिसाले मौजूद है जिनकी हमें ज़रूरत है

चार अलग-अलग जगाहो पर आयतें मौजूद हैं जो आम तोर पर बयान करती हैं के क़ुरान मे वो तमाम मिसाले, कहानियाँ, या मिलती जुलती बातें मौजूद हैं जिनकी हमें ज़रूरत है। ये आयतें 7:89, 8:54, 30:58, और 39:27 हैं। जब हम इन चारों अहम आयतों के आयत नम्बरों को जमा करते हैं, तो सब मिला कर 228, या 19 x 12 बनता है।

89+54+58+27=228= ⟨19⟩ X 12.

وَلَقَدْ صَرَّفْنَا لِلنَّاسِ فِى هَٰذَا ٱلْقُرْءَانِ مِن كُلِّ مَثَلٍ فَأَبَىٰٓ أَكْثَرُ ٱلنَّاسِ إِلَّا كُفُورًا ﴿٨٩﴾

وَلَقَدْ صَرَّفْنَا فِى هَٰذَا ٱلْقُرْءَانِ لِلنَّاسِ مِن كُلِّ مَثَلٍ ۚ وَكَانَ ٱلْإِنسَٰنُ أَكْثَرَ شَىْءٍ جَدَلًا ﴿٥٤﴾

وَلَقَدْ ضَرَبْنَا لِلنَّاسِ فِى هَٰذَا ٱلْقُرْءَانِ مِن كُلِّ مَثَلٍ ۚ وَلَئِن جِئْتَهُم بِـَٔايَةٍ لَّيَقُولَنَّ ٱلَّذِينَ كَفَرُوٓا۟ إِنْ أَنتُمْ إِلَّا مُبْطِلُونَ ﴿٥٨﴾
كَذَٰلِكَ يَطْبَعُ ٱللَّهُ عَلَىٰ قُلُوبِ ٱلَّذِينَ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٥٩﴾

وَلَقَدْ ضَرَبْنَا لِلنَّاسِ فِى هَٰذَا ٱلْقُرْءَانِ مِن كُلِّ مَثَلٍ لَّعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُونَ ﴿٢٧﴾
قُرْءَانًا عَرَبِيًّا غَيْرَ ذِى عِوَجٍ لَّعَلَّهُمْ يَتَّقُونَ ﴿٢٨﴾
ضَرَبَ ٱللَّهُ مَثَلًا رَّجُلًا فِيهِ شُرَكَآءُ مُتَشَٰكِسُونَ وَرَجُلًا سَلَمًا لِّرَجُلٍ هَلْ
يَسْتَوِيَانِ مَثَلًا ۚ ٱلْحَمْدُ لِلَّهِ ۚ بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٢٩﴾
إِنَّكَ مَيِّتٌ وَإِنَّهُم مَّيِّتُونَ ﴿٣٠﴾
ثُمَّ إِنَّكُمْ يَوْمَ ٱلْقِيَٰمَةِ عِندَ رَبِّكُمْ تَخْتَصِمُونَ﴿٣١﴾
فَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّن كَذَبَ عَلَى ٱللَّهِ وَكَذَّبَ بِٱلصِّدْقِ إِذْ جَآءَهُۥٓ ۚ أَلَيْسَ فِى
جَهَنَّمَ مَثْوًى لِّلْكَٰفِرِينَ ﴿٣٢﴾

हमने इस क़ुरान में लोगों के लिए हर तरह की मिसाले बयान की है, लेकिन ज़्यादातर लोग कुफ्र करने पर अड़े रहते है। (17:89)

हमने इस क़ुरान में हर तरह की मिसाले बयान की है, लेकिन इंसान सब से ज़्यादा बहस करने वाली मख्लूक़ हैं। (18:54)

"इस तरह, हमने इस क़ुरान में लोगो के लिए हर तरह की मिसाले बयान की है। फ़िर भी अगर आप काफिरो के सामने कोई भी दलील पेश करें, वो कहते है, 'तुम झूठे हो।'" (30:58). “इस तरह ख़ुदा उन के दिलो पर मोहर लगा देते हैं जो इल्म नहीं रखते।” (30:59)

"हमने इस क़ुरान में लोगो के लिए हर तरह की मिसाले बयान की है के शायद वो तवज्जो दे सके।" (39:27). "एक अरबी क़ुरान बिना शक-ओ-शुबा के, ताकि वो नेक हो सके।" (39:28). ख़ुदा एक ऐसे इंसान की मिसाल बयान करते है जो झगड़ने वाले शरीको (हदीस) से मुआमला रखता है, उस इंसान के मुकाबले में जो महेज़ एक ही ज़रिया (क़ुरान) से मुआमला रखता है। क्या वो एक जैसे है? सारी तारीफ ख़ुदा के लिए है; लेकिन उनमे ज़्यादातर इल्म नहीं रखते। (39:29) तुम (मुहम्मद) भी यकीनन मर जाओगे, जिस तरह वो मर जाएगे।" (39:30) क़यामत के दिन अपने रब के सामने तुम एक दूसरे के साथ झगड़ोगे।" (39:31) उससे ज़्यादा बुरा कौन हो सकता है जो ख़ुदा के बारे में झूट बोलता है, और सच्चाई पर ईमान नहीं लाता जो उसके पास आई है? क्या जहन्नम काफिरो के लिए सही सज़ा नहीं है? (39:32)

इन चार आयतों के आयत नंबर 89, 54, 58 और 27 हैं।

89 + 54 + 58 + 27 = 228

228 = ⟨19⟩ x 12

ऊपर दिखाई गई आयते आगे बताती हैं की मुहम्मद एक इंसान है जिसे हम सब की तरह मरना है, और ये की हम कानून के **एक ज़रिये** की पैरवी करे ना की काफी सारे दूसरे हक़ के खिलाफ जाने वाले ज़रियो की। वो **एक ज़रिया** ऊपर आयत 28 में क़ुरान की तरफ इशारा करता है।

हदीस : जहाँ वो जो कुछ भी चाहते हैं उन्हें मिल जाता हैं।

आखिर में, यहाँ **फिज़िकल सबूत** का एक टुकड़ा है जो हमें बताता है कि मोमिनों को इस हकीक़त से पहचाना जा सकता है कि वो **हमेशा एक ज़रिया** (क़ुरान) को मान कर चलते

हैं, जबकि काफ़िर "एक ऐसी किताब को मान कर चलते है जिसमें वो हर वो चीज़ ढूंढ निकालते है जो वो चाहते हैं " ये एक मानी हुई हक़ीक़त है कि हम "हदीस" की किताबों में जो कुछ भी चाहें हमें मिल जाता हैं।

ये बयान काफिरों से एक सवाल कि शक्ल मे ये बयान कराता है, "**क्या आप एक ऐसी किताब पर अमल करते है जहाँ आपको वो हर चीज़ मिल जाए जो आप चाहते हैं**?"

ये अहम बयान इत्तेफाक से नंबर (38) हैं।

38 = ⟨19⟩ x 2

اَفَنَجْعَلُ الْمُسْلِمِيْنَ كَالْمُجْرِمِيْنَ ﴿٣٥﴾ مَا لَكُمْ كَيْفَ تَحْكُمُوْنَ ﴿٣٦﴾
اَمْ لَكُمْ كِتٰبٌ فِيْهِ تَدْرُسُوْنَ ﴿٣٧﴾ اِنَّ لَكُمْ فِيْهِ لَمَا تَخَيَّرُوْنَ ﴿٣٨﴾ ➡

"क्या हम मुसलमानों के साथ मुजरिमो जैसा सलूक करें? क्या हो गया हैं तुम्हारी सोच को? **क्या आप किसी ऐसी किताब को मानते हैं जिसमें तुम्हे वो सब कुछ मिल जाए जो आप चाहते हैं?**" 68:35-38

ख़ुदा क़ुरान को कहते हैं : **मुक्कमल हैं** (6:115)

ख़ुदा क़ुरान को कहते हैं : **पूरा तफ्सीली हैं** (6:114)

ख़ुदा क़ुरान को कहते हैं : **दुरुस्त हैं** (6:38)

नबी सिर्फ क़ुरान को पहुचाते है (69:40-47).

हदीस और सुन्नत गुस्ताख़ाना बिद्दत हैं (6:112 और 25:31)
(6:112 और 25:31).

तुम सिर्फ क़ुरान पर अमल करो (6:19 ; 7:3 ; आदि)

यहाँ तक की ख़ुदा ने **फिज़िकल सबूत भी** अता किए (पेज 82-87 देखें)

फिर भी वो ये सब देखने में नाकाम क्यों हो जाते हैं ???!!!

<u>वो ख़ुदा को मानने में क्यों नाकाम रहते है?</u>

क्योंकि जो वो मुह से कह रहे हैं उनके दिल अंदर से इनकार कर रहे हैं। वो समाजी और तालीमी हालात की वजह से अक़ीदे को मानते हैं, लेकिन उनके दिल अंदर से इंकार कर रहे है:

اِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ۚ فَالَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ قُلُوْبُهُمْ مُّنْكِرَةٌ وَّهُمْ مُّسْتَكْبِرُوْنَ ﴿٢٢﴾

"तुम्हारा ख़ुदा सिर्फ **एक ख़ुदा** हैं। लेकिन वो लोग जो आखिरत पर ईमान नहीं रखते, उनके दिल इनकार कर रहे हैं, और वो बहुत मगरूर हैं।" 16:22

इस इन्कार का नतीजा (किसी का मज़बूत ईमान से इनकार करना) खुदको पूरी तरह क़ुरान से दूर करना है।

وَاِذَا قَرَاْتَ الْقُرْاٰنَ جَعَلْنَا بَيْنَكَ وَبَيْنَ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ حِجَابًا مَّسْتُوْرًا ۙ﴿٤٥﴾ وَّجَعَلْنَا عَلٰى قُلُوْبِهِمْ اَكِنَّةً اَنْ يَّفْقَهُوْهُ وَفِيْٓ اٰذَانِهِمْ وَقْرًا ۭ وَاِذَا ذَكَرْتَ رَبَّكَ فِي الْقُرْاٰنِ وَحْدَهٗ وَلَّوْا عَلٰٓى اَدْبَارِهِمْ نُفُوْرًا ﴿٤٦﴾

"जब तुम क़ुरान पढ़ते हो, तो हम तुम्हारे और जो आखिरत पर ईमान नहीं रखते उन लोगों के बीच **एक पोशीदा पर्दा** रखते हैं। और हम उनके दिलों पर ताले लगा देते है और उनके कानों को बहरा कर देते है ताकि वो इसे समझ ना सके। इस लिए, जब तुम **वाहिद क़ुरान** से अपने रब(**सिर्फ**) का ज़िक्र करते हो तो वो नफ़रत से पीठ मोड़ कर चल देते है।" 17:45-46

इसलिए, वो **<u>सिर्फ क़ुरान</u>** को कुबूल नहीं कर सकते; वो "<u>हदीस और सुन्नत</u>" जैसे दूसरे ज़रियों की तलब करते हैं।

यक़ीनन जीत

क़ुरान बिल्कुल साफ़ तौर पर सिखाता है की **<u>जीत</u>** मुसलमानों के लिए यक़ीनन हैं।

وَكَانَ حَقًّا عَلَيْنَا نَصْرُ الْمُؤْمِنِيْنَ

"हमने फैसला कर दिए है कि जीत मोमिनो की होगी" 30:47

اِنَّا لَنَـنْصُرُ رُسُلَنَا وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَيَوْمَ يَقُوْمُ الْاَشْهَادُ ﴿۵۱﴾

"हम अपने रसूलो और ईमान वालो को <u>इस ज़िन्दगी मे</u> भी और क़यामत के दिन भी जीत अता करेंगे।" 40:51

وَلَيَنْصُرَنَّ اللهُ مَنْ يَّنْصُرُهٗ ۗ اِنَّ اللهَ لَقَوِیٌّ عَزِيْزٌ ﴿٤٠﴾

"जो ख़ुदा का साथ देते है, वो उन्हें जीत दे कर उनका साथ देते है। ख़ुदा है ताकतवर, सारी ताकत वाले।" 22:40

اِنَّ اللهَ يُدٰفِعُ عَنِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ۗ اِنَّ اللهَ لَا يُحِبُّ كُلَّ خَوَّانٍ كَفُوْرٍ ﴿٣٨﴾

"ख़ुदा यकीनन ईमान वाले की हिफाज़त करेंगे। ख़ुदा किसी दगेबाज़, काफ़िर को पसंद नहीं करते।" 22:38

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِنْ تَنْصُرُوا اللهَ يَنْصُرْكُمْ وَيُثَبِّتْ اَقْدَامَكُمْ ﴿٧﴾

"ऐ ईमान वालों, अगर तुम ख़ुदा का साथ दोगे, तो वो तुम्हें जीत अता करेंगे, और तुम्हारे कदम मज़बूत करेंगे।" 47:7

फिर मुसलमानो की हार क्यों होती है?

पिछले पेज पर दीखाई गई जीत की गॅरंटी को दिखाते हुए, और चूँकि ख़ुदा कभी गलत नहीं होते, इसलिए आज के "मुसलमान" मुस्लिम नहीं हो सकते।

<u>तारीखी हक़ायत</u>

जब तक मुस्लिम **उम्मत** ने क़ुरान को क़ायम रखा, और क़ुरान के अलावा कुछ भी नहीं, मुसलमानों ने सायंसी, तकनीकी, सकाफति, समाजी, अक्सरी और इक्तासदी तौर पर दुनिया की रहनुमाई की। वो एक भी जंग नहीं हारे। इस्लाम की सरहदें मगरिबी अफ्रीका से चीन तक; जुनुबी फ्रांस और मशरिकी जर्मनी में फ़ैल गई।

तीसरी सदी हिजरी के शुरुआत में **हदीस और सुन्नत** के आग़ाज़ के साथ, मुसलमान **उम्मत** की मुसलसल गिरावट शुरू हो गई। जब से क़ुरान के अलावा हिदायत के ज़रिए के तौर पर यह बिद्दतें ज़ाहिर हुई, मुसलमानों ने एक भी जंग नहीं जीती।

क्यों सिर्फ 3 मिलियन इसरायली मुसलसल 150 मिलियन अरबियों को हरा रहे हैं ??

क्या ये समझ के बाहर नहीं कि 3 मिलियन इसरायलीयो ने 1000 मिलियन मुसलमानों को अपनी मस्जिद से बाहर निकालने पर मजबूर कर दिया?

भारत लगातार पाकिस्तान को क्यों हराता है? क्यों रूसी अफ़गानिस्तान पर हमला करते हैं? वगैरा.....वगैरा.....वगैरा।

फिर "मुसलमानो की हार क्यों होती हैं?

क्योंकि वो ख़ुदा के बार-बार बताए गए बयानों पर यकीन करने से इनकार करते हैं के क़ुरान **मुकम्मल, दुरुस्त, तफ्सीली** और **मज़हबी तालीमात का वाहिद ज़रिया होगा।**

क्योंकि उन्होंने क़ुरान के अलावा दुसरे ज़रियो यानि हदीस और सुन्नत को क़ुबूल किया है।

وَمَنْ اَعْرَضَ عَنْ ذِكْرِىْ فَاِنَّ لَـهٗ مَعِيْشَةً ضَنْكًا وَّنَحْشُرُهٗ
يَوْمَ الْقِيٰمَةِ اَعْمٰى ﴿١٢٤﴾ قَالَ رَبِّ لِمَ حَشَرْتَنِىْٓ اَعْمٰى
وَقَدْ كُنْتُ بَصِيْرًا ﴿١٢٥﴾ قَالَ كَذٰلِكَ اَتَتْكَ اٰيٰتُنَا
فَنَسِيْتَهَا وَكَذٰلِكَ الْيَوْمَ تُنْسٰى ﴿١٢٦﴾ وَكَذٰلِكَ نَجْزِىْ مَنْ
اَسْرَفَ وَلَمْ يُؤْمِنْ بِاٰيٰتِ رَبِّهٖ وَلَعَذَابُ الْاٰخِرَةِ اَشَدُّ وَاَبْقٰى ﴿١٢٧﴾

"जो भी मेरे पैगाम (क़ुरान) को नज़र अंदाज़ करेगा उसकी ज़िन्दगी तकलीफो वाली होंगी , फिर हम उसे क़यामत के दिन, अंधा करके दोबारा उठाएँगे। वो कहेगा, ऐ मेरे रब, आपने मुझे अंधा करके क्यों जिंदा किया, जबकि में (पहली ज़िन्दगी में) देखने वाला हुआ करता था? (ख़ुदा कहेंगे), वो इसलिए है कि हमारी आयते तुम्हारे पास आई, लेकिन तुमने उन्हें भुला दिया, और इसलिए, आज हम तुम्हे भूल गए हैं।' इस तरह हम उन लोगों को सज़ा देते हैं जो हद से आगे बढ़ जाते हैं और अपने रब की आयतों को मानने से इनकार करते हैं। और यक़ीनन आख़िरत का अज़ाब बहुत बुरा और हमेशा के लिए रहने वाला है।" 20:124-129

हदीस क़ुरान से मुँह फेरने की वजह बनी

(1) क्या आप इस तरह से अपना वज़ू करते हैं?

हालाँकि क़ुरान में ख़ुदा का हुक्म वज़ू को लेकर सीधा और आसान है, लेकिन ज़्यादातर "मुसलमान" ख़ुदा के साथ दूसरे ख़ुदा को मानते हैं, वो ख़ुदा के बताए गए तरीके पर वज़ू नहीं करते। आख़िरी नतीजा: ज़िल्लत और हार।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا قُمْتُمْ اِلَى الصَّلٰوةِ فَاغْسِلُوْا وُجُوْهَكُمْ وَاَيْدِيَكُمْ
اِلَى الْمَرَافِقِ وَامْسَحُوْا بِرُءُوْسِكُمْ وَاَرْجُلَكُمْ اِلَى الْكَعْبَيْنِ
وَاِنْ كُنْتُمْ جُنُبًا فَاطَّهَّرُوْا

"ऐ ईमान वालो, जब तुम नमाज़ अदा करने के लिए उठते है तो अपने चहरे को धोएँ, अपने हाथों से लेकर कोहनी तक धोएँ, अपने सरो का मसह, और अपने पैरों को धोएँ।" 5:6

आज के ज़्यादा तर "मुसलमान" ख़ुदा के हुक्म से मुतमईन होने से इंकार करते हैं। वो इंसान के हुक्मो को क़ायम करते हैं , जैसे की "ईमान" और "उलेमा" हैं। इस के नतीजे में एक बहुत लम्बा वज़ू करते है जिसकी बुनियाद इस बात पर होगी की ये किस फ़िरक़े के मानने वाले हैं। तमाम फ़िरक़ों ने मुख्तलिफ ईमानो की राए ले कर इस नतीजे पर पहुचे की नबी इस तरह से अपना वज़ू किया करते थे। इस तरह वो शैतान के जाल में फस गए, अपने ख़ालिक़ की नाफरमानी की, और अपने ऊपर शिकस्त (हार) और मुसीबते ले आए।

हदीस क़ुरान से मुँह फेरने की वजह बनी

(2) क्या आप इस तरह से अपनी नमाज़े अदा करते हैं?

وَلَا تُخَافِتْ بِهَا وَابْتَغِ بَيْنَ ذٰلِكَ سَبِيْلًا

"जब तुम नमाज़ पढ़ो तो तुम्हारी आवाज़ ना ज़्यादा ऊँची होनी चाहिए और ना ही बहुत धीमी होनी चाहिए; तुम एक दर्मियानी आवाज़ को बरक़रार रखो।" 17:110

ख़ुदा की इन सीधी हिदायत के बावजूद, ज़्यादा तर "मुसलमान" को हदीस ने भटका दिया गया; वो ज़ोहर की नमाज़, असर की नमाज़, मगरीब की तीसरी रकात और ईशा की नमाज़ के दूसरे हिस्से के दौरान पूरी तरह ख़ामोशी बनाए रखते हैं। **ये हिदायत उन्हें कहाँ से मिली?** ख़ुदा के अलावा दूसरे ख़ुदा से; क़ुरान के अलावा कोई और ज़रिए से।

और इस तरह वो लोग बड़े पैमाने पर शैतान के जाल मे फँस गए और अपने खालिक़ की नाफ़रमानी की, जिनका लफ्ज़ (क़ुरान) मुकम्मल है, और पूरी तरह दुरुस्त है, और पूरा तफ्सीली है (6:19, 38 & 114).

हदीस क़ुरान से मुँह फेरने की वजह बनी

(3) क्या आप नमाज़ मे ख़ुदा के अलावा दूसरे नामो का ज़िक्र करते हैं?

ये ख़ुदा का हुक्म है की हम अपनी नमाज़ो में ख़ुदा के नाम के अलावा किसी भी नाम का ज़िक्र नहीं करेंगे (72:18).

लेकिन आज ज़्यादा तर मुसलमान उन बिद्दातों को मानते है जो उन्हें हुक्म देती है के अपने ख़ुदा को नमाज़ अदा करते वक़्त मुहम्मद और इब्राहिम की तारीफ और तस्बीह करें।

وَّاَنَّ الْمَسٰجِدَ لِلّٰهِ فَلَا تَدْعُوْا مَعَ اللّٰهِ اَحَدًا ﴿١٨﴾

"मस्जिदें ख़ुदा की है इसलिये ख़ुदा के नाम के अलावा किसी दूसरे के नामो का ज़िक्र ना करें।" 72:18

इससे ज़्यादा साफ़ बात और क्या हो सकती है?

"मुसलमान" शैतान के धोके में आ कर "तशाहूद" जैसी बिद्दत को पढ़ते है, जहां वो मुहम्मद और इब्राहिम की तारीफ और तसबीह करते है।

इस बात पे ध्यान दिया जाना चाहिए की यहाँ तक के हदीस और सुन्नत भी इस बात को मानती है के "तशाहूद" एक बिद्दत है जो नमाज़ का हिस्सा नहीं है!

क्या ये खुली बुत-परस्ती नहीं हैं???

हदीस और सुन्नत बा मुक़ाबला ख़ुदा का क़ानून

ये बताने के बाद के ज़ीना के खिलाफ कानून "बिलकुल साफ़" हैं, क़ुरान हमें ज़ीना करने वालो को 100 कोड़े मारने की सज़ा देने का हुक्म देता है। क्या मुसलमानों ने अपने खालिक़ का हुक्म माना और उस पर अमल किया? **नहीं।** मुसलमान "उलेमा" ने ये एलान किया था कि क़ुरान का कानून साफ़ साफ़ नहीं है!! उन्होंने दावा किया के क़ुरान में ज़ीना करने वालो के शादी शुदा होने के बारे में नहीं समझाया गया, और उन्हें हदीस की ज़रूरत है क़ुरान को समझने के लिए!!!

سُوْرَةٌ اَنْزَلْنٰهَا وَفَرَضْنٰهَا وَاَنْزَلْنَا فِيْهَآ اٰيٰتٍۢ بَيِّنٰتٍ لَّعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ ۝١
اَلزَّانِيَةُ وَالزَّانِىْ فَاجْلِدُوْا كُلَّ وَاحِدٍ مِّنْهُمَا مِائَةَ جَلْدَةٍ ۖ وَّلَا تَاْخُذْكُمْ بِهِمَا
رَاْفَةٌ فِىْ دِيْنِ اللّٰهِ اِنْ كُنْتُمْ تُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ۚ وَلْيَشْهَدْ عَذَابَهُمَا
طَآئِفَةٌ مِّنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝٢

"ये सूरत हम नाज़िल करते हैं, और कानून के तौर पर हुक्म देते हैं, और उसमें आयतें नाज़िल करते हैं जो बिलकुल वाज़ेह (साफ़-साफ़) हैं ताकि तुम तवज्जो दे सको। ज़ानीया (औरत) और ज़ानी (मर्द), तुम उन में से हर एक को सौ कोड़े मारो, अगर तुम वाकई ख़ुदा और आख़िरत पर ईमान रखते हो तो उनपर रहम खा कर ख़ुदा के कानून पर अमल करने से मत रुको। मोमिनों के एक गिरोह को उनकी सज़ा देखने दें।" 24:1-2

रिवाज और शैतान के दबाओ में आने की वजह से "मुसलमान" उलमा ने शादी शुदा ज़ानी जोड़े की सज़ा को पत्थर मार कर जान से मारना मुक़र्रर किया है!!!

ख़ुदा की अताअत करो और रसूल की अताअत करो

शैतान लाखों मुसलमानों को धोके से इस बात पर यक़ीन दिलाने में कामयाब हो गया **की ख़ुदा की अताअत का मतलब क़ुरान की अताअत करना है, जब कि रसूल की अताअत करना मतलब हदीस की अताअत करना है**।

इस शैतानी चाल को मक़बूल बनाने में जिस चीज़ ने मदद की वो थी मुसलमान अवाम में क़ुरान के बारे में आम जहालत और खुदाई हुक्मो पर ध्यान देने में नाकामयाबी, के कुरआन ही मज़हबी रहनुमाई / और कानून का **वाहिद ज़रिया** होगा।

सिर्फ एक छोटी सी सोच हमें इस बात का एहसास दिलाती है कि क़ुरान मुहम्मद के मुँह के ज़रिए हमारे पास पहुचा, और **ना की ख़ुदा के तरफ से सीधे-सीधे हमारे पास पहुचा**। इसलिए ये हुक्म है की हम रसूल की अताअत करें... क्योंकि वो ख़ुदा के अलफ़ाज़ को कहते हैं।

पिछली तमाम किताबों में भी यही क़ुरानी सच्चाई बयान की गई है के: "जो भी रसूल कि अताअत की उसने ख़ुदा की अताअत की।" क्योंकि ये ज़ाहिर सी बात है कि रसूल तो ख़ुदा नहीं है, इसलिए हुक्म का साफ़ साफ़ मतलब ये हैं कि रसूल के ज़रिए कहे गए ख़ुदा के अल्फाज़ पर अमल किया जाए।

इसलिए, इल्म रखने वाले और खुशकिस्मत मोमिनो को इस बात का एहसास है कि हदीस और सुन्नत शैतानी मन-घड़त बातें हैं जिनका मकसद लोगो को ख़ुदा की राह से भटकाना है।

मुहम्मद की हदीसे मुहम्मद की नहीं है

इसके बजाए, वो उन आदमियों और औरतों की **हदीस** (रिवायत) हैं जिन्होंने पैगम्बर को कभी नहीं देखा; असल में, उनके दादा-दादी के दादा-दादी ने भी कभी पैगम्बर को नहीं देखा।

यह सब जानते हैं कि **हदीस** की पहली किताब बुखारी की है, जो मुहम्मद के इन्तेकाल के 200 साल से भी ज़्यादा के बाद पैदा हुए थे। जब बुखारी ने **हदीसों** की अपनी किताब लिखी, तो वो उन लोगों से मिलने जाते थे, जिन्हें वो ज़रियो के तौर पर जानते थे। यह जाँच करने के बाद की उसका ज़रिया "सच्चा" है, और वो नेक आदमी या औरत के तौर पर जाने जाते है, बुखारी पूछते थे, "क्या आप **हदीस** जानते हैं?" वो इंसान जवाब देता था, "हाँ", फिर "**हदीस**" को इस तरह बयान करने शुरू करेगा : "मैंने अपने अब्बा से सुना, ख़ुदा उनकी रूह सलामत रखें, ये कहते हुए की उन्होंने अपने बड़े भाई को सुना, ख़ुदा उनकी रूह सलामत रखें, कहते है की वो अपनी दादी के साथ बैठे थे, ख़ुदा उनकी रूह सलामत रखें, और उन्होंने उनसे कहा कि वो अपने बड़े चाचा के साथ एक दिन रात का खाना खा रहे थे, ख़ुदा उनकी रूह सलामत रखें, जब उन्होंने कहा कि उनके नाना ईमान अहमद इबने मुहम्मद अल अमावी को जानते थे, जिन्होंने इसका ज़िक्र किया था कि उनके दादा ने अपने सबसे बड़े चाचा से सुना कि वो पैगम्बर के अज़ीम साथी उमर इबने खालिद अल-यमानी से मिले, और उन्होंने उनसे कहा की पैगम्बर, सलामती हो उन पर, ने फ़रमाया, ..."

इस तरह, **हदीस** सिर्फ बुखारी के ज़रिए मिली एक कहानी है, जो इस बात का दावा करती है कि उसने (मर्द या औरत) मरने वालों की 8 पुश्तों के बाद पैगम्बर के बारे में कुछ सुना है।

दूसरी तरफ़, अब हमारे पास **अटूट फिज़िकल एविडेंस** हैं की क़ुरान ख़ुदा का बे-ऐब लफ्ज़ है, और इसको पैगम्बर मुहम्मद ने फ़रमाया था। इसलिए हम रसूल की अताअत तब करते है, जब क़ुरान की अताअत करते है; क़ुरान के अलावा और कुछ नहीं।

हदीस को मानना रसूल की बात मानने जैसा नहीं है

इसके बजाए ये उन आदमियों और औरतों की अताअत करना है जिन्होने "**हदीस**" बयान की।

नाम निहाद **हदीस** को मानना हक़ीकत में उन छोटी सोच रखने वाले लोगो की जमात की बात मानना है जो सोचते हैं के नबी ने उनके पैदा होने से 200 साल पहले कुछ कहा था।

इस तरह, अगर किसी **हदीस** का बयान करने वाला मिसाल के तौर पर अब्बास इबने यासीर है, तो अब्बास इबने यासीर की तरफ़ से सुनाई गई **हदीस** को मानना असल में अब्बास इब्न यासीर की अताअत करना है, और इसका पैगम्बर की अताअत करने से कोई लेना-देना नहीं है।

नबी मुहम्मद की असल में अताअत सिर्फ क़ुरान की अताअत में है, जो वाक़ई मुहम्मद की तरफ से बोला गया था और इसको **फिज़िकल एविडेंस** से मदद मिली है जिस में कोई शक की गुंजाइश नहीं है।

ये सच्चाइयां क़ुरान के बार बार बताए गए बयानों को समझती हैं के "**सिर्फ ज़हानत रखने वाले ही ध्यान देते हैं**।"

क़ुरान हम तक मुहम्मद के मुह से बोले गए अल्फ़ाज़ के ज़रिए पहुचा, बगैर किसी इंसान के बीच मे आते हुए। क़ुरान मुहम्मद के मुँह से सीधा वही लिखने वालो के कानों तक पहुँचा, जो बहुत एतियात से उसी वक़्त इसको लिख लेते थे जैसे ही वो मुहम्मद के मुँह से बोला जाता था।

इस तरह, मुहम्मद की सही **हदीस** सिर्फ क़ुरान है। इसके अलावा, ख़ुदा तआला ने अपने अल्फ़ाज़ को हमेशा के लिए महफ़ूज़ रखने की गॉरन्टी दी है, जैसा की मुहम्मद ने कहे है (15 :9).

बड़ी तबाही

اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا يُنَادَوْنَ لَمَقْتُ اللّٰهِ اَكْبَرُ مِنْ مَّقْتِكُمْ اَنْفُسَكُمْ اِذْ تُدْعَوْنَ اِلَى الْاِيْمَانِ فَتَكْفُرُوْنَ ﴿١٠﴾

قَالُوْا رَبَّنَآ اَمَتَّنَا اثْنَتَيْنِ وَاَحْيَيْتَنَا اثْنَتَيْنِ فَاعْتَرَفْنَا بِذُنُوْبِنَا فَهَلْ اِلٰى خُرُوْجٍ مِّنْ سَبِيْلٍ ﴿١١﴾

ذٰلِكُمْ بِاَنَّهٗٓ اِذَا دُعِىَ اللّٰهُ وَحْدَهٗ كَفَرْتُمْ وَاِنْ يُّشْرَكْ بِهٖ تُؤْمِنُوْا فَالْحُكْمُ اللّٰهِ الْعَلِىِّ الْكَبِيْرِ ﴿١٢﴾

"(क़यामत के दिन) काफिरों से कहा जाएगा, 'ख़ुदा की नफ़रत तुम पर उससे कहीं ज़्यादा है जितनी नफ़रत तुमको खुद के लिए है, क्योंकि तुम्हें ईमान की दावत दी गई थी लेकिन तुमने इनकार कर दिया।' वो कहेंगे, 'ऐ हमारे रब, आपने हमें दो मरतबा मौत और दो मरतबा ज़िंदगी दी, और अब हम अपने गुनाहो को क़ुबूल करते हैं; **क्या कोई बचने का रास्ता है**?' ये इसलिये है क्योंकि जब **सिर्फ ख़ुदा** की वक़ालत की गयी थी, तो तुमने मानने से इनकार कर दिया। लेकिन जब उसके साथ बुतो की वक़ालत की गयी, तो तुमने यकीन किया। इसलिए, फैसला अब ख़ुदा के पास है, जो सबसे आला, अज़ीम है।" 40:10-12

जब **सिर्फ ख़ुदा** की वक़ालत की जाती है, तो क्या आप यकीन रखते हैं? **या** क्या आपको उनके साथ दुसरो की वकालत करनी है?

बड़ी तबाही

فَلَمَّا جَآءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ فَرِحُوْا بِمَا عِنْدَهُمْ مِّنَ الْعِلْمِ وَحَاقَ بِهِمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿٨٣﴾

فَلَمَّا رَاَوْا بَاْسَنَا قَالُوْٓا اٰمَنَّا بِاللّٰهِ وَحْدَهٗ وَكَفَرْنَا بِمَا كُنَّا بِهٖ مُشْرِكِيْنَ ﴿٨٤﴾

فَلَمْ يَكُ يَنْفَعُهُمْ اِيْمَانُهُمْ لَمَّا رَاَوْا بَاْسَنَا سُنَّتَ اللّٰهِ الَّتِيْ قَدْ خَلَتْ فِيْ عِبَادِهٖ وَخَسِرَ هُنَالِكَ الْكٰفِرُوْنَ ﴿٨٥﴾

"जब उनके रसूल उनके पास साफ़ सबूत के साथ गए, तो वो उस इल्म के साथ मुतमईन थे जो उनके पास पहले से था, और जिस चीज़ का उन्होंने मज़ाक उड़ाया था, वो उनकी बर्बादी की वजह बनी। फिर, जब उन्होंने हमारे अज़ाब को देखा, तो उन्होंने कहा, **'अब हम सिर्फ ख़ुदा पर यकीन रखते हैं और हम इससे पहले की गई बुत-परस्ती को रद्द करते है**।' लेकिन अफसोस, अज़ाब देखने के बाद उनका अक़ीदा उनके लिए बेकार है। ऐसा ख़ुदा का कानून है जो कभी नहीं बदलता; ऐसे काफ़िर बर्बाद है।"

40:83-85

क्या आप अपने माँ-बाप, बुज़ुर्गो या आलिमो से विरासत में मिले इल्म से खुश और मुतमईन हैं? (हदीस और सुन्नत).

क्या आप ख़ुदा की तालीमात के हक में ऐसे इल्म को छोड़ देने के लिए तैयार है? **या**, क्या आप के लिए बहुत देर हो चुकी है?

अज़ीम मयार / उसूल

وَاِذَا ذُكِرَ اللّٰهُ وَحْدَهُ اشْمَاَزَّتْ قُلُوْبُ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ ۚ وَاِذَا ذُكِرَ الَّذِيْنَ مِنْ دُوْنِهٖٓ اِذَا هُمْ يَسْتَبْشِرُوْنَ ﴿٤٥﴾

जब सिर्फ ख़ुदा की वक़ालत की जाती है, तो उन लोगों के दिल जो आखिरत पर यकीन नहीं रखते हैं, नफ़रत से सिकुड़ जाते हैं। लेकिन जब उनके अलावा बुतों का ज़िक्र किया जाता है, तो वो खुश होते हैं (39:45).

वज़ाहत (सफाई) : हम यहाँ क्यों आए हैं

क़ुरान बा मुक़ाबला **हदीस और सुन्नत** का सारा मुआमला साफ़ तौर पर तब ही समझ आ जाता है जब हम अपनी ज़िन्दगी का मक़सद समझ जाते हैं।

हम इस दुनिया में एक और सिर्फ एक मकसद के लिए मौजूद हैं। जैसा कि क़ुरान में बयान किया गया है (67:1-2 और 51:56) हमें **सिर्फ ख़ुदा** की इबादत करने के वाहिद मकसद के लिए बनाया गया था ।

ख़ुदा के साथ शैतान शरीक होना चाहता था, ख़ुदा के अलावा एक और ख़ुदा। इस लिए, ख़ुदा ने आदम को शैतान के बागी ख़यालात को बेनक़ाब करने के लिए बनाया। और ख़ुदा ने हमे बनाया ताकि वो शैतान और तमाम फरिश्तों को ये दिखाए के हम **सिर्फ उसी** की इबादत कर सकते है बिना किसी को शरीक बनाए।

इसलिए, हमारे वजूद का मकसद सिर्फ ख़ुदा की इबादत कराना है। इसलिये **सिर्फ बुत-परस्ती ही एक ऐसा गुनाह है जिसकी माफ़ी नहीं है**। ऐसा इसलिए है क्योंकि एक बार जब हम ख़ुदा के अलावा किसी को, या किसी भी चीज़ को बुत बना देते हैं, तो हम इम्तिहान में नाकाम हो जाते हैं।

हम अपने वजूद का मकसद सिर्फ इसी सूरत मे पूरा करते है **जब हम मुहम्मद, या ईसा, या मरियम, या किसी पीर, या किसी ईमाम, या किसी भी इंसान, या कोई भी चीज़ को बुत बनाए बगैर सिर्फ ख़ुदा की इबादत करने में कामयाबी हासिल करते हैं**।

जब हम मुहम्मद, या ख़ुदा के अलावा किसी और ज़रिए से मज़हबी हिदायत तलब करते हैं तो हम शैतान के उस दावे की हिमायत करते हैं के ख़ुदा को एक साथी/शरीक की जरुरत है। इसलिए जो लोग **सिर्फ** ख़ुदा की इबादत करते है वो **सिर्फ ख़ुदा** की हिदायत और तालीमात पर अमल करते हैं। जैसा के इस किताब में दिखाया गया है के ख़ुदा की तालीमात क़ुरान में मुकम्मल, दुरुस्त, और पूरी तराह तफसील से है।

आखिर में: सबसे अहम सवाल

क्या आपके मन में **सिर्फ** ख़ुदा का ख्याल रह सकता है???

_____

या, क्या ख़ुदा को आपके मन में मुहम्मद को रखने की ज़रूरत है, याद करने और इबादत करने के लिए???

_____

क्या **सिर्फ ख़ुदा** आपके मन में रह सकते है??

_____

या, क्या ख़ुदा को आपके मन में किसी शरीक की ज़रूरत है, जैसे की मुहम्मद, ईसा, मरियम, या कुछ बाबा पीरो की???

_____

क्या आप बिलकुल खुश और मुतमइन होगें अगर आप **सिर्फ ख़ुदा** के बारे में जानते हैं बगैर मुहम्मद, ईसा, मरियम, या किसी वाली या किसी भी इंसान या किसी भी चीज़ को शामिल किये हुए?

क्या आप **सिर्फ ख़ुदा** के बारे में बात करने से नाराज़ है?

जब मैं **सिर्फ ख़ुदा** के बारे में बात करता रहता हूँ, तो क्या यह आपको परेशान करता है? क्या आप को ख़ुदा के साथ दूसरे नामो को भी सुनना है? क्या **सिर्फ ख़ुदा** आपके मन में रह सकते है?

जब मै **सिर्फ ख़ुदा** के बारें मे अपनी बात बार बार दोहराता रहता हु तो क्या आपको चीड़ महसूस होती है? या, आप खुश और मुतमइन हैं **सिर्फ ख़ुदा** की बात करने में???

अज़ीम क़ुरानी मयार की बुनियाद पर जैसा कि 39:45 में बयान किया गया है, इन सवालात के आप के जवाबात खुद को और आपकी तक़दीर को जानने का हल बताते हैं।

NOTES

यह पेज **क़ुरान हदीस और इस्लाम** किताब का हिस्सा नहीं है। यहाँ पर किताब में इस्तेमाल किये गए कुछ लफ्ज़ो के मा'नी है।

तर्जुमा- किसी भाषा को दूसरी भाषा में बदलना
पेशनगोई- आगे की बात बताना, भविष्य वाणी.
इज़्हारात- इज़हार करना
दानिस्ता- अक्लमंदी से
उनवान- नाम , टाइटल
मादरी ज़ुबान- माता पिता के बोलने की और सब से पहले सीखी जानेवाली भाषा, अपनी बोली
ऐतमाद- यकीन
खिलाफ वर्ज़ी- विरोध जताना
नतीज़तन- परिणाम स्वरुप
मुर्तकिब- जुर्म करना, कुछ ऐसा करना जो नहीं करना चाहिए था
गुस्ताख़ाना- गुस्ताख़ी से
बिला-मुतज़ादएक जैसा, एक सा, बराबर
इनीशियल- नाम का पहला हर्फ़, मिसाल के तौर अलिफ़ लाम मीम', या सीन आदि
ज़हानत- अक्लमंदी
तज़ाद- एक दूसरे के विरुद्ध होना, इख्तिलाफ़
तालीमात- सिखाना
एहतराम- इज्ज़त करना
बुतपरस्ती- एक से ज़्यादा खुदा की इबादत करना
तलब- खोजना, तलाश, मांग, इच्छा, चाह
अताअत- फरमाबरदारी
तर्जुमा- किसी भाषा को दूसरी भाषा में बदलना
मुकम्मल- पुरे तरीके से
तब्दील- बदलना
खौफनाक- डरावना
कादिर ए मुतलकजो- हर चीज़ पर हावी हो
खालिक- खुदा
शहादतग- वाही
मुकम्मल- पूरा
तफसील- किसी बात को खोल कर बयान करना
महफूज़- किसी चीज़ को ऐसी जगह रखना जिसे कोई पा न सके
शिर्क- खुदा के नाम ,उसके तरीके और उसके वजूद के साथ किसी अन्य को मिलाना

ईमान- खुदा पर सबसे ज़्यादा यकीन
नबी- ईश दूत
रसुल- खुदा का पैगाम पहुचाने वाला
तस्बीह- जाप करना
सुन्नत- तरीका
आखिरत/क़यामत- वो दिन जिसमे इंसानों से खुदा उनके कर्मो की जवाबदेही करेगा
अदब- जिसे बड़ी इज्ज़त हासिल हो
खैरात- ज़रूरत मंदों को दी जाने वाली रक़म
माबूद- खुदा
तसव्वुर- ख्याल
शरीक- मिलाना
मुक़द्दस महीने- वो महीने जिनमे लड़ाई करने का हुक्म नहीं है, जिसमे हज किया जाता है
मुक़द्दस- पाक, पवित्र
काफिर- इंकार करने वाला
मुआशरा- समाज
मख्सूस- खास
इल्तिजा- गुज़ारिश
फराइज- एक से ज़्यादा ज़रूरी काम
तशरीह- खोलकर बयान करना
मुख़्तसर- बहुत सारी बातो को बहुत थोड़े में कहना
मोजेज़ा- चमत्कार
वाहिद- तन्हा, अकेला, यकता, यगाना, अलग। यकता, भगवान का एक विशिष्ट नाम
वाहिद (واحد) की न्यूमेरिकल वैल्यू = 19 ['و' (वा") 6 + 'ا' (अलिफ) 1+ 'ح' (हा) 8 + 'د' दा 4 = 19]